नंदा

उत्तराखण्ड महिला परिषद् की पत्रिका

अल्मोड़ा - अक्टूबर, २०२५ वर्ष - २४ | अंक - २५ केवल आन्तरिक वितरण हेतु

सर्वाधिकार सुरक्षित ©

प्रतियाँ – 1000

प्रकाशन सहयोग
राजेश्वर सुशीला दयाल
चैरीटेबल ट्रस्ट, नई दिल्ली

परिकल्पना एवं सम्पादन
अनुराधा पाण्डे

विशेष आभार
पद्मश्री डॉ0 ललित पाण्डे, उत्तराखण्ड महिला परिषद् से जुड़ी सभी संस्थाएं, ग्राम संकुल एवं महिला संगठन

सहयोग
रमा जोशी, कैलाश पपनै, जी. पी. पाण्डे, धरम सिंह लटवाल, जीवन चन्द्र जोशी

फोटो
अनुराधा पाण्डे

कवर डिजाइन
आशीष पाण्डे

टंकण
धरम सिंह लटवाल

उत्तराखंड महिला परिषद्

वर्तमान में सक्रिय संस्थाएं एवं ग्राम संकुल

सक्रिय संस्थाएं :
शेप–बधाणी, कर्णप्रयाग, जिला चमोली
पर्यावरण संरक्षण समिति–पाटी, जिला चम्पावत
नवज्योति महिला कल्याण संस्थान–गोपेश्वर, जिला चमोली

ग्राम संकुल :
मैचून, जिला अल्मोड़ा
बिन्ता, जिला अल्मोड़ा
गल्ला–पाटा, जिला नैनीताल
शामा–गोगीना, जिला बागेश्वर
गणाई–गंगोली, जिला पिथौरागढ़

प्रकाशक
उत्तराखण्ड महिला परिषद्
द्वारा उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान
अल्मोड़ा–263601

मुद्रक
सत्य शांति प्रेस
लाला बाजार, अल्मोड़ा
फोन–9997157413

पत्रिका में दिये गये विचार लेखक/लेखिका के हैं। परिषद् का इससे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

नंदा

उत्तराखण्ड महिला परिषद् की पत्रिका

अल्मोड़ा - अक्टूबर, २०२५ वर्ष - २४ | अंक - २५ केवल आन्तरिक वितरण हेतु

इस अंक में

हमारी बातें–अनुराधा पांडे, अल्मोड़ा 2
1 **अविस्मरणीय दिवस**–बबीता भण्डारी, ग्राम मालई, जिला चमोली 7
2 **महिला सम्मेलन**–चन्द्रकला मौनी, ग्राम रौलमेल, जिला चम्पावत 11
3 **संगठनों में जोश और उत्साह है**–रचना नेगी, ग्राम जाख, जिला चमोली 14
4 **कुछ नया करने की चाह**–शान्ति रावत, ग्राम सुरना, जिला अल्मोड़ा 17
5 **प्रथम प्रशिक्षण का अनुभव**–हिमानी, ग्राम पूनाकोट, जिला चम्पावत 19
6 **मेरा गाँव**–रितु आर्या, ग्राम मनिआगर, जिला चमोली 21
7 **आयवृद्धि के लिए प्रयास**–कौशल्या रौतेला, ग्राम धारी गोगिना, जिला बागेश्वर 24
8 **बन्दरों को भगाने की बारी लगायी**–काजल बिष्ट, ग्राम ग्वाड़, जिला चमोली 26
9 **एक–दूसरे की मदद करते हैं**–कलावती मेहता, ग्राम मल्खा डुगर्चा, जिला बागेश्वर 28
10 **पंचायती चुनावों में मतदाता जागरूकता**–पायल बिष्ट, गोपेश्वर, जिला चमोली 29
11 **महिलाएं पंचायत प्रतिनिधि बनीं**–विनोद कुमार, ग्राम खोला, जिला अल्मोड़ा 31
12 **हमारे गाँव का जन्माष्टमी मेला**–कंचन भण्डारी, ग्राम मालई, जिला चमोली 34
13 **ग्राम शिक्षण केन्द्र कमलेख**–सुहानी बोहरा, ग्राम कमलेख, जिला चम्पावत 36
14 **सभी महिलाएं संगठन में जुड़ीं**–दीपा आर्या, ग्राम सुरना, जिला अल्मोड़ा 38
15 **पानी**–निकिता सोरारी, ग्राम गूम, जिला चम्पावत 40
16 **केन्द्र सबके सहयोग से चलता है**–लक्ष्मी नेगी, ग्राम जाख, जिला चमोली 41
17 **महिला संगठन की गोष्ठियाँ**–पलक पचौरी, ग्राम पाटी, जिला चम्पावत 43
18 **शिक्षा सर्वोपरि है**–अनुष्का बर्त्वाल, ग्राम दोगड़ी–काण्डई, जिला चमोली 45
19 **माँ ऊफराई, मोडवी देवी की यात्रा**–कमलेश आर्या, ग्राम दुबतौली, जिला चमोली 46
20 **महिला संगठन का योगदान**–माया बोरा, ग्राम बोरखोला, जिला अल्मोड़ा 48
21 **स्याल्दे बिखौती का मेला**–सरिता रावत, ग्राम मटेला, जिला अल्मोड़ा 50
22 **संस्था से जुड़ाव**–सुमन नेगी, ग्राम काण्डई, जिला चमोली 52
23 **सब ठीक है**–सुमन नेगी, ग्राम काण्डई, जिला चमोली 54
24 **जंगलों में आग लग रही है**–कलावती मेहता, ग्राम रातिर केठी, जिला बागेश्वर 55
25 **अल्मोड़ा में किशोरी बैठक**–विजय प्रणिता चौहान, ग्राम जाख, जिला चमोली 57
26 **खकोली भूमि**–राधा बोरा, ग्राम खकोली, बिन्ता, जिला अल्मोड़ा 58
27 **कम्प्यूटर केन्द्र**–विपाशा रावत, ग्राम दोगड़ी–काण्डई, जिला चमोली 59
28 **उत्तराखण्ड में आपदा**–लक्ष्मी नेगी, ग्राम जाख, जिला चमोली 60
29 **सिमली माँ चण्डिका द्योरा यात्रा**–वन्दना पंवार, ग्राम कोली, जिला चमोली 62
30 **जानवरों का आतंक**–गिरीश चन्द्र जोशी, ग्राम मौनी, जिला अल्मोड़ा 66
31 **गाँव में सुविधा**–रंजना पंवार, ग्राम कोली, जिला चमोली 68
32 **यह कैसी उधेड़बुन**–कैलाश पपनै, जिला अल्मोड़ा 70
33 **अनाज न बो कर घास लगा रहे**–संताषी कुंवर, ग्राम ग्वाड़, जिला चमोली 73

हमारी बातें

उत्तराखण्ड में 2025 राज्य बनने की रजत जयंती का वर्ष है। इन पच्चीस वर्षों में सड़कों का जाल बड़ा विस्तार पा गया। नयी–पुरानी सड़कों के दोनों तरफ नयी–नयी बसासतें आकार लेती चली गयीं। रोपाई के खेतों के बीच घर बने। लोग गाँवों से आकर सड़कों के किनारे बसने लगे। दुकानें, होटल, होम–स्टे बने। पुराने कस्बे शहरों में बदले। पुराने शहरों को महानगर कहा जाने लगा। शहरों में उपलब्ध सुविधाओं और गाँवों में निरंतर बनी रही कठिनाइयों के कारण ग्रामवासी पलायन करते रहे। टाइम्स ऑफ इंडिया 2023 में प्रकाशित एक लेख के अनुसार 2022 तक लगभग 1792 गाँव पूरी तरह या आंशिक रूप से खाली हो गये थे।

वर्ष 2025 की वर्षा ऋतु अतिवृष्टि, दरकते–खिसकते पहाड़ों और राज्य में आपदा के काल के रूप में लोक–स्मृति में बसी रहेगी। धराली–हर्षिल क्षेत्र, जिला उत्तरकाशी, में 5 अगस्त 2025 को आयी बाढ़ और गाद ने भारी तबाही मचायी। न सिर्फ खीरगाड़ ने अपना रास्ता और स्वरूप बदला अपितु जनहानि के साथ–साथ अनेक भवन, होटल, दुकानें, पुल, सड़कें आदि नष्ट हो गये। कई लोग लापता बताये गये। इस के बाद 23 अगस्त 2025 को चमोली जिले के थराली नगर पंचायत में वर्षा से भारी नुकसान हुआ। बारिश के कारण टुनरी गधेरे में अचानक जलस्तर बढ़ा और थराली बाजार में कई दुकानों और घरों में घुस आये मलवे से तबाही मच गयी। आस–पास के गाँवों से भी नुकसान की खबरें आयीं। इसी बीच राज्य में अनेक जगहों पर भू–स्खलन और जमीन/सड़कें धँसने से यातायात बंद रहा। स्याना चट्टी के पास हुए भू–स्खलन के बाद यमुना नदी से भवनों में क्षति और आस–पास के गाँवों/कस्बों से पूरी तरह संपर्क टूट जाने की खबरें भी आयीं। 2021 में रैंणी गाँव, जिला चमोली, 2013 में केदारनाथ एवं पिंडर घाटी, 2012 में ऊखीमठ और 2010 में अल्मोड़ा के आस–पास के गाँवों में भारी वर्षा और भू–स्खलन से न केवल जनहानि हुई बल्कि खेतों, रिहायशी भवनों, गौशालाओं के नुकसान से जन–जीवन अस्त–व्यस्त रहा। इसके अतिरिक्त उत्तराखण्ड में अन्य अनेक जगहों पर नुकसान होता रहा है।

उपरोक्त संदर्भों के मद्देनजर उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान अल्मोड़ा ने 2023–2025 की अवधि में एक शोध किया। इस शोध में उत्तराखण्ड में रहने वाले लोगों के लिये जलवायु–परिवर्तन के मायने को समझने का प्रयास हुआ है। साथ ही, पर्वतीय क्षेत्रों में तेजी से हो रहे शहरीकरण को दो

परिप्रेक्ष्यों में देखा गया। पहली तो सड़कों के किनारे तेजी से फैल रही बसासतें हैं। दूसरा अल्मोड़ा, जो कुमाऊँ का प्राचीनतम नगर है, के निवासी जलवायु परिवर्तन को कैसे समझते हैं, इस का सर्वेक्षण किया गया। नयी बसासतों के अध्ययन के लिये पनुवानौला तथा सिमल्टी बिन्ता क्षेत्र चुने गये। पनुवानौला एक पहाड़ी के ऊपर बसा, चारों तरफ जंगलों से घिरा हुआ इलाका है। सिमल्टी–बिन्ता एक घाटी में स्थित है। ये दोनों अध्ययन क्षेत्र अल्मोड़ा जिला में आते हैं।

इन तीनों इलाकों के अध्ययन से पता चलता है कि सड़कों के विस्तार, सीमेंट से बने घरों, होटलों, दुकानों, विद्यालयों, अस्पतालों, सरकारी दफ्तरों के होने के बावजूद जीवन की असुरक्षा और कमजोर रहन–सहन के अनेक कारक और उन के असर हमारे बीच में मौजूद हैं।

पनुवानौला और सिमल्टी बिन्ता में बसासतों के विकास का रूझान देखें। पनुवानौला में 1960 की शुरूआत में पहला निर्माण एक चाय की दुकान के तौर पर हुआ। सिमल्टी–बिन्ता अपेक्षाकृत नया बसा हुआ इलाका है। यहाँ 1975 के आसपास लोगों ने आसपास के गाँवों से आकर बसना शुरू किया। वर्तमान में पनुवानौला में लगभग अस्सी दुकानें और सत्तावन परिवार हैं। सिमल्टी बिन्ता में लगभग तीस परिवार निवास कर रहे हैं। इन बसाव का ढ़ंग सड़क की दिशा से निर्धारित हुआ है। सड़क के दोनों ओर एक क्रम में छोटे–बड़े मकान बनते गये। जहाँ गाँवों में पटाल की छतें, छोटी–छोटी बाखलियाँ, घरों के सामने आंगन अभी मौजूद हैं, सड़कों के किनारे बने हुए घरों में आंगन गौशाला आदि का स्थान दुकानों ने ले लिया है।

मुख्य सड़क से छोटी–छोटी सड़कें जुड़कर आस–पास के गाँवों तक पहुँचती हैं। गाँवों से बाजार तक जीप, दो पहिया वाहनों की आवाजाही लगी रहती है। नये बने इन बाजारों में अनेक स्त्रियाँ दुकानें चला रही हैं। किसी ने सिलाई–बुनाई का कारोबार शुरू किया है तो कोई ब्यूटी–पार्लर चलाती है। कुछ नवयुवतियाँ कम्प्यूटर सहायता केन्द्र में काम करती हैं और कोई पारिवारिक व्यवसाय को बढ़ाने में मदद कर रही हैं। बाजारों में अनुभव की जाने वाली बाधाओं के बावजूद ये सभी स्त्रियाँ अपने नये काम को बहुत महत्व देती हैं। सर्वेक्षण के दौरान सभी महिला व्यवसायियों ने कहा कि उनकी आर्थिक और सामाजिक स्थिति गाँव में रहने की अपेक्षा बेहतर हुई है।

सर्वेक्षण में पता चला कि अधिकतर लोगों ने जलवायु–परिवर्तन शब्द सुना था। 31 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि जलवायु–परिवर्तन के प्रमुख

कारण शहरीकरण और वायु में प्रदुषण होना हैं। इस जागरूकता के बावजूद सभी उत्तरदाता सीमेंट के, टाइल लगे हुए घर बनाना चाहते हैं या ऐसे मकानों में रहना चाहते हैं। सभी उत्तरदाता चाहते थे कि उन के पास कोई न कोई वाहन हो। इस से यह पता चलता है कि जलवायु–परिवर्तन के विषय में जागरूकता तो है परंतु उस से लोगों की आकांक्षाएं सीमित नहीं होती। लोग सुविधाजनक घरों में रहना चाहते हैं। अपना वाहन होने की अभिलाषा रखते हैं। जागरूकता के बावजूद पहाड़वासी कोई व्यक्तिगत या सामुहिक काम करके जलवायु–परिवर्तन के असर को कम या खत्म करने के प्रति उत्साहित नहीं जान पड़े। अधिकतर उत्तरदाता मानते हैं कि इस विषय में सरकार को कुछ काम करना चाहिए। सर्वसम्मत सुझावों में कहा गया कि सरकार वनीकरण को बढ़ावा दे। साथ ही गाँवों और खेतों में आ रहे जंगली जानवरों की आवाजाही को नियंत्रित करने के उपाय करे।

पिछले कुछ दशकों में पानी की सुलभता पर गहरा असर हुआ है। पनुवानौला में 30 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा कि मनुष्यों के लिये पीने के पानी की कमी हुई है। 40 प्रतिशत उत्तरदाता मानते है कि मनुष्यों के साथ–साथ पालतू पशुओं के लिये पीने के पानी की समस्या बढ़ी है। सिमल्टी बिन्ता में 50 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने मनुष्यों और 54 प्रतिशत ने पालतू पशुओं के लिये पीने के पानी की कमी बताई। बिन्ता क्षेत्र में धान बोया जाता है। 62 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा कि रोपाई–सिंचाई के लिए उपलब्ध पानी पहले से कम हुआ है। पनुवानौला में 60 प्रतिशत और बिन्ता में 67 प्रतिशत लोगों ने जंगलों की आग पर चिंता जताई।

अधिकतर उत्तरदाताओं ने कहा कि अब कम समय में तीव्र वेग वाली वर्षा की घटनाएं बढ़ी हैं। इस से भू–स्खलन, भूमि का कटाव हो रहा है। इस के अतिरिक्त वर्षा उस वक्त नहीं होती जब किसान को दरकार रहती है। अनेक उत्तरदाता मानते हैं कि ऋतुओं के समय में थोड़ा बदलाव हुआ है। मानसून सितंबर माह के अंत तक रहता है। नवम्बर में ठंड कम पड़ती है पर मार्च–अप्रैल में ठंड बनी रहती है। इस बदलाव का असर कृषि पर हुआ है। फलों के पेड़ों में फूल लगने और फूल से फल बनने के समय में बदलाव हो रहा है। इन सभी अनुभवों के बावजूद पुराने फसल चक्र पर लोगों का विश्वास बना हुआ है। ग्रामवासी बीजों को बोने या फसल काटने के समय में बदलाव नहीं कर रहे।

इस सर्वेक्षण में अल्मोड़ा नगर में 15 प्रतिशत उत्तरदाता पारंपरिक तरीके से बने हुए घरों में रह रहे थे। सीमेंट के बने हुए आधुनिक घरों में 43 प्रतिशत उत्तरदाता निवास कर रहे थे। पटाल या पत्थरों की छत सिर्फ 10 प्रतिशत घरों में थी। 51 प्रतिशत लोगों के घरों में सीमेंट की छतें थी। नये बन रहे भवनों का आकार वहाँ पर उपलब्ध स्थान की सीमाओं से निर्धारित हो रहा है। लोग आड़े–तिरछे कमरों में रहने से परहेज नहीं कर रहे। सर्वेक्षण से मालुम चला कि भूकंप, जलवायु–परिवर्तन, भू–स्खलन या भूमि कटाव आदि कारकों को भवन–निर्माता ज्यादा तवज्जो नहीं देते। वे यह भी मानते हैं कि भूकंप–अवरोधी या जलवायु–परिवर्तन के अनुकूलन के हिसाब से घर बनाने में निर्माण की लागत बढ़ जाती है।

यद्यपि 48 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा कि उन्होंने घर बनाने के लिये जगह का चुनाव आपदा की दृष्टि से किया है लेकिन निर्माण–कार्य सुरक्षा मानदंडों के अनुकूल नहीं हुआ। गृह–स्वामियों ने चट्टान के प्रकार या मिट्टी की जाँच के लिये कोई प्रयास नहीं किये। अनेक गृह–स्वामी इस तथ्य की जानकारी न होने की बात कहते रहे कि 30 डिग्री से अधिक ढ़ाल होने पर मकान न बनाये जायें, जब तक उस स्थल में ठोस–कठोर चट्टान न हो। कुछ मकानों में घर की ओर जा रहे रास्तों की ढ़ाल भी सुरक्षित नहीं थी, न ही ऐसी किसी ढ़ाल को सुरक्षित करने का कोई विचार समाज में मौजूद था।

रास्तों की सुरक्षा होना कठिन भी था क्योंकि मकान के ऊपर–नीचे की जमीनें गृह–स्वामी की न हो कर किसी अन्य परिवार की थी। अल्मोड़ा में मकानों की सुरक्षा के लिये अधिकतर नये घर पत्थरों की मजबूत दीवार (प्लिंथ) को आधार बना कर बने हैं जो ढ़लान के साथ घर के कोण को संतुलित करने के लिये एक प्रभावी कदम है।

अल्मोड़ा जिला में जलवायु–परिवर्तन के प्रभाव को कम करने के लिये सरकारी योजनाओं के साथ–साथ सौर ऊर्जा में निवेश बढ़ा है, कुल संस्थापित क्षमता भी बढ़ रही है। इस में सरकारी अनुदान के अनुरूप बढ़ोत्तरी हो रही है, हालांकि सौर कुकर की अपेक्षा सौर जल तापन (हीटर) ज्यादा लोकप्रिय है। सोलर लाइट या सौर प्रकाश का उपयोग भी पिछले कुछ सालों से बढ़ा है। इस शोध से यह भी पता चलता है कि उत्तराखण्ड के जंगलों में उत्सर्जित कार्बन को सोखने की अपूर्व क्षमता है।

उत्तराखण्ड के अल्मोड़ा जिले और शहर में किये गये इस शोध ने दिखाया कि राज्य में भौतिक कमजोरी और जोखिमों का स्वरूप बदल रहा है।

2011–2024 में अल्मोड़ा शहर में 27 प्रतिशत आवासीय भवनों की वृद्धि दर्ज की गयी। भूकंप के प्रति संवेदनशील और पारिस्थितिक रूप से नाजुक होने के बावजूद स्थानीय इमारतों के निर्माण के लिये बने नियमों, भूमि–उपयोग, पर्यावरणीय मानकों का प्रयोग कमतर ही रहा। विभिन्न प्रकार के निर्माण कार्यों से उपजे मलवे का निस्तारण भी एक समस्या के रूप में उभरा है।

एक अन्य महत्त्वपूर्ण बदलाव जो इस सर्वेक्षण से पता चला, वह सामाजिक मूल्यों से जुड़ा है। पलायन, सामुदायिक जीवन और संयुक्त परिवार के विघटन को अब लोग कमजोरी नहीं समझते। सामुहिक अनुकूलन की दिशा में साझा संसाधनों का उपयोग, रहन–सहन में लचीलापन और भावनात्मक सहयोग आदि घटक एक प्रभावी आधार बनाते हैं परंतु अब इन मूल्यों में कमी हुई है। जैसे–लोग पानी की निकासी के लिये अपने हिस्से की जमीन देने में पड़ोसी या परिजनों से आनाकानी करें तो बरसाती पानी स्वयं अपना रास्ता बनायेगा, जो भू–कटाव या भू–स्खलन का स्रोत हो सकता है।

इस अध्ययन के निष्कर्ष बताते हैं कि दैनिक जीवन की समस्याएं ही पर्यावरण और जलवायु–परिवर्तन के प्रति लोगों की धारणाएं बनाती हैं। आवास संबंधी कठिनाइयाँ, भीड़–भरी सड़कें, पानी की कमी, नगर की सफाई और कूड़े का निस्तारण वे समस्याएं हैं जो उत्तरदाताओं ने निरंतर सर्वेक्षकों के सामने इस आशा के साथ रखीं कि शायद कोई हल निकले।

जलवायु–परिवर्तन एक धीमी, जटिल और एकदम पता न चलने वाली प्रक्रिया है। लोग जलवायु–परिवर्तन की अवधारणा पर विश्वास करते हैं लेकिन इस के लिये कोई ठोस कदम नहीं उठा रहे। जलवायु–परिवर्तन के अनुकूल जीवन बनाने की दिशा में काम करने की जरूरत है।

इस अंक में इतना ही,

शुभेच्छु

अनुराधा पांडे

अविस्मरणीय दिवस

बबीता भण्डारी

इस वर्ष सात जनवरी 2025 को मालई गाँव, जिला चमोली, में ग्राम शिक्षण केन्द्र के माध्यम से बाल–मेले का आयोजन हुआ। हमारे गाँव में यह पहला बाल मेला था जो ग्रामवासियों के पूर्ण सहयोग से आयोजित हुआ। हमारी संस्था शेप तथा उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान के सहयोग से प्रत्येक वर्ष बाल मेले का आयोजन अलग–अलग गाँवों में होता है। बाल–मेला हर एक वर्ष के अंतिम महीनों में होता है। मेले में पूरे वर्ष में हो रही गतिविधियों का उल्लेख रहता है। मालई गाँव में संपन्न हुए बाल–मेले में भी सभी केन्द्रों के बच्चों ने बढ़–चढ़कर भाग लिया।

बाल–मेला होने से पहले बधाणी गाँव में एक गोष्ठी हुई। सभी शिक्षिकाओं, मार्गदर्शिका और हमारे संस्था के सचिव जी ने मिल कर बाल–मेले के आयोजन का दिन तय किया। कार्यक्रम की रूपरेखा बनाई। खेलों व अन्य गतिविधियों की सूची तैयार की। विगत वर्ष के बाल–मेले से यह आयोजन बेहतर किया जाए, इस पर चर्चा हुई। हमने चित्रांकन के लिये विषय चुने। इसमें कृषि औजार विषय पर सहमति हुई। स्वरचित कविता के लिये तुलसी, बुराँश, बाँज, पीपल विषय रखे गये। स्वरचित कहानी में हमारी संस्कृति एवं परम्परा, भाषण में जलवायु परिवर्तन विषय रखे। मंच के अन्य कार्यक्रम तय किये। साथ ही गणित दौड़, पानी दौड़, जलेबी दौड़, रस्सी कूद जैसे खेलों को चुना। ये सभी गतिविधियाँ बच्चों की उम्र व बाल–मेला के लिये चुने गये स्थान के अनुसार तय की गयीं। जिससे बच्चों को कोई नुकसान न पहुँचे और अतिथियों को भी असुविधा न हो।

बाल–मेले की तैयारी के लिये अन्य दो–तीन बैठकें हुईं। उसके बाद सभी लोग अपने–अपने विषयों पर तैयारियाँ करने लगे। मेरे केन्द्र के बच्चे तो इस बार ज्यादा ही खुश थे क्योंकि एक तो बाल मेला हमारे गाँव में हो रहा था और दूसरा सभी को किसी न किसी कार्यक्रम में भाग लेने का मौका मिल रहा था। जब किसी अन्य गाँव में बाल मेला होता है तो केन्द्र के छोटे बच्चों को ले जाना थोड़ा मुश्किल होता है। इस कारण सभी बच्चे बहुत खुश थे। कुछ कार्यक्रम तो बच्चों ने खुद तैयार किये और कुछ मैंने उन्हें तैयार करके दिये। सभी केन्द्रों के बच्चों ने बाल–मेले के लिए बहुत ही सुन्दर तैयारी की थी।

सात जनवरी 2025 को बाल मेले का दिन आ ही गया। मुझे थोड़ा घबराहट हो रही थी। गाँव में पहली बार मेरे संयोजन में बाल–मेला हो रहा था। कार्यक्रम की सफलता की चिंता थी। मेरे परिवार व गाँव में अन्य सभी लोगों ने दिलासा देते हुए कहा कि तैयारियाँ अच्छी की हैं, बाल–मेला भी अच्छा ही होगा। उस दिन मौसम भी सुबह से खराब सा हो रहा था। आसमान में घने बादल थे। बारिश होने की संभावना लग रही थी।

मैं सुबह जल्दी तैयार हो कर अपने गाँव की सड़क के पास पहुँची। वहीं पर बाल–मेला होना था। मैं जब वहाँ पहुँची तो देखा कि गाँव के सभी युवा टैंट लगाना, कुर्सी लाना, बर्तन लाना, चटाई बिछाना जैसे कार्य कर रहे थे। उन्होंने मुझे कहा कि जो भी काम है हम कर देते हैं। तुम्हें बताना है कि किस प्रकार क्या करना है। मैंने मंच की सजावट, फूल–पत्तों की माला बनाना, गुब्बारे फुलाना आदि सभी कार्य मालई गाँव के युवाओं व केन्द्र के बच्चों के साथ मिलकर किये। सजावट का काम कर ही रहे थे कि हमारे नजदीकी केन्द्र के बच्चे व शिक्षिका भी आ गये। उन्होंने भी हमारी मदद की। हमने पताकाओं को पेड़ों की टहनियों और मंच में लगी टिन से जोड़ा और प्यारी सी सजावट कर दी। तत्पश्चात् महिलाओं ने वहाँ पर बचे हुए सभी कार्य पूरे कर दिये। इस कार्य में महिला संगठन की अध्यक्षा ने पूरा सहयोग दिया। उसके बाद उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान अल्मोड़ा से आये अतिथि और मार्गदर्शिका, संस्था सचिव व अन्य केन्द्रों के बच्चे व शिक्षिकाएं इत्यादि सभी लोग मालई पहुँच गये। हम सभी शिक्षिकाओं ने अपने–अपने केन्द्र की ओर से बच्चों द्वारा बनायी गयी सामग्री की प्रदर्शनी लगायी। इस समय कुछ शिक्षिकाओं ने सभी बच्चों को एक गोले में खड़ा कर के भावगीत कराया। इसके बाद बाल मेले की शुरूआत की।

बाल–मेले की शुरूआत दीव प्रज्जवलन के साथ हुई। उसके बाद सभी केन्द्रों के बच्चों ने कार्यक्रम प्रस्तुत किये। श्री कैलाश पपनै जी व हमारे गाँव की महिला श्रीमती सुजाता कुंवर चाची जी ने बच्चों को जज किया। बच्चों के प्रतिभाग के अनुसार प्रथम, द्वितीय, तृतीय श्रेणी दी गयी। सभी बच्चों ने मंच में प्रस्तुत किये गये नाटक, कहानी, कविता, बेबी शो, गणित दौड़, चित्रांकन, भाषण आदि प्रतियोगिताओं में अपनी–अपनी श्रेणी प्राप्त की। मैंने बीच–बीच में सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता भी करायी। जिसमें पाँच–पाँच करके प्रश्न पूछे और बच्चों ने जवाब दिया। इस खुली प्रतियोगिता में उन्हें एक–एक पैन इनाम के रूप में दिया गया।

एक तरफ ये कार्यक्रम चल रहा था तो दूसरी तरफ गाँव के लड़के, युवा और पुरूष मिलकर भोजन की तैयारियाँ कर रहे थे। वे बच्चों के लिए स्वादिष्ट भोजन बना रहे थे। उन्होंने चाय–पानी की तैयारियाँ जारी रखी थीं। चाय, बिस्किट की व्यवस्था महिला संगठन की तरफ से की गयी। महिलाओं ने पूरा सहयोग दिया। सभी ग्रामवासी बहुत ज्यादा खुश थे कि हमारे गाँव में बाल–मेला हो रहा है।

खेल प्रतियोगिताओं की शुरूआत हुई। जलेबी दौड़ में बच्चों ने खूब उछल–उछल कर जलेबी खायी और खाते–खाते दौड़ने का प्रयास किया। पानी–दौड़ में बच्चों ने दौड़कर पानी की बोतलों को भरा और वापस उस बोतल पर ढ़क्कन लगाकर लाये। रस्सीकूद प्रतियोगिता में भी बच्चों ने बड़ी देर तक खेल का आनन्द लिया।

बच्चों के उत्साहवर्धन हेतु गाँव के मुख्य सदस्यों, इच्छुक व्यक्तियों और कुछ बुजुर्गों द्वारा भाषण दिया गया। तत्पश्चात् पुरस्कार वितरण की प्रक्रिया हुई। बच्चों को ढेर सारे आशीर्वाद और इनाम मिले। फिर सभी ने चल बैजयंती ट्रॉफी का इंतजार किया। चल बैजयंती ट्रॉफी उसी केन्द्र को मिलती है, जहाँ पर बच्चों ने सभी कार्यक्रमों में प्रतिभाग कर कुछ ना कुछ स्थान प्राप्त किया हो। इस साल की चल बैजयंती ट्रॉफी मेरे ही केन्द्र को मिली क्योंकि बच्चों ने सभी प्रतियेगितओं में कोई न कोई स्थान प्राप्त किया था।

ट्रॉफी मिलने के बाद सभी ने कुछ तस्वीरें खींची। स्वादिष्ट भोजन तैयार था। गाँव के सभी लोगों ने मिल–बाँटकर बच्चों और अतिथियों को खाना खिलाया।

मेरे गाँव में रहने वाले एक भाई ने यू–ट्यूब पर हमारे बाल मेले का एक सुन्दर ब्लॉग बनाया। जो सैकड़ों लोगों ने देखा। सभी को बाल मेला बहुत अच्छा लगा। सभी ने कहा और हम शिक्षिकाओं ने भी देखा कि यह बाल–मेला बहुत अच्छा रहा। सिर्फ शिक्षिका नहीं बल्कि गाँव के सभी युवा, पुरूष, महिलाओं, किशोर–किशोरियों ने मिल–जुलकर कार्य किया। सबसे अच्छी बात

किसी ग्रामीण महिला का मंच पर आकर संचालिका व मार्गदर्शिका का सहयोग करना रहा। मंच का संचालन महिला संगठन की सदस्याओं ने भी किया। केन्द्र के प्रति एक बहुत बड़ा सहयोग मालई गाँव की सभी महिलाओं व पुरूषों ने दिया।

सभी को धन्यवाद देते हुए हमारे संस्था सचिव श्री शिव नारायण किमोठी जी के द्वारा बाल–मेले का समापन किया गया। सभी केन्द्रों की शिक्षिकाएं व बच्चे अपने–अपने घरों की ओर वापस चले गये। उसके बाद सारा सामान उठाने का काम गाँव के पुरूषों ने ही किया। बर्तन धोने का काम महिलाओं ने किया। केन्द्र के सामान का रखरखाव मैंने और बच्चों ने मिल कर किया। शाम के पाँच–छः बजे हम सभी मालई निवासी अपने–अपने घरों की ओर चले और एक शानदार, अविस्मरणीय दिन का समापन हुआ।

◆◆●◆◆

महिला सम्मेलन

चन्द्रकला मौनी

मैं रौलमेल गाँव, जिला चम्पावत, में ग्राम शिक्षण केन्द्र चलाती हूँ। केन्द्र का संचालन करते हुए तीन साल हो गये हैं। केन्द्र गाँव के पंचायत घर में चलता है। मैं बच्चों को अनेकानेक गतिविधियाँ सिखाती हूँ। हमारे शिक्षण केन्द्र के माध्यम से बहुत से कार्यक्रम किये जाते हैं। इस बार पाटी क्षेत्र का महिला सम्मेलन तोली गाँव में पर्यावरण संरक्षण समिति के भवन में हुआ। महिला सम्मेलन बहुत ही अच्छा हुआ। दो सौ महिलाओं की संख्या हुई।

हमारी संस्था से जुड़े हुए सभी लोगों ने अपना–अपना योगदान दिया। शिक्षिकाओं ने महिला–गोष्ठियाँ की और अलग–अलग गाँवों में जा कर लोगों का मनोबल बढ़ाया। साथ ही पर्यावरण संरक्षण समिति में जो कार्य होते हैं, ग्राम शिक्षण केन्द्र में बच्चों के साथ विभिन्न प्रकार की जो गतिविधियाँ की जाती हैं, इन सब के बारे में बताया। अधिकतर महिलाओं का कहना था कि हमारे गाँवों में भी शिक्षण केन्द्र की व्यवस्था की जाये, जिससे हमारे बच्चों का चहुँमुखी विकास हो। जब शिक्षिकाओं ने उन से समस्याएं पूछीं तो महिलाओं ने कहा कि गाँवों में जंगली सुअरों ने बहुत नुकसान कर दिया है। खेतों में तार–बाड़ की व्यवस्था होनी चाहिए। कुछ महिलाओं का कहना था कि गाँव में पानी की व्यवस्था नहीं है, इस पर काम हो।

हमारे संस्था के प्रमुख द्वारा कहा गया कि सभी महिलाएं सम्मेलन में भाग लें और अपनी समस्याओं को मंच पर रखें। इस प्रकार सभी गाँवों की महिलाएं सम्मेलन में आयीं और अपनी समस्याओं को बताया। कुछ नये गाँवों की महिलाएं संस्था से जुड़ना चाहती थीं, वे भी सम्मेलन में शामिल रहीं। कुछ किशोरियाँ भी आयी थीं। शुरूआत में किशोरियाँ बोलने के लिए मंच पर नहीं आ रही थी। लोगों के सामने बोलने में झिझक रही थी। कुछ समय बाद शिक्षिकाओं को देखकर उनका मनोबल बढ़ा और किशोरियों ने खुद मंच पर आ कर चेतना गीत गाये। कुछ किशोरियों ने अपने विचार रखते हुए कहा कि हमारे गाँव में भी शिक्षण केन्द्र खोला जाए। जिससे हम भी इस संस्था से जुड़ें और अपने गाँव में शिक्षा की व्यवस्था में सुधार लायें।

एक युवा स्त्री का कहना था कि, ''हमारे गाँव की महिलाएं ऐसे कार्यक्रमों में हिस्सा नहीं लेती हैं। वे अपने घर के कामों तक सीमित हैं। मैं आज महिला सम्मेलन में आयी हूँ लेकिन हमारे गाँव से एक भी महिला नहीं आयी है। मैं

अपने गाँव में ग्राम शिक्षण केन्द्र खोल कर महिलाओं को गोष्ठियों में समझा कर उन्हें भी ऐसे कार्यक्रमों में हिस्सा लेने की प्रेरणा देना चाहती हूँ।'' इस बात पर संस्था प्रमुख ने कहा कि ''तुम अपने गाँव में महिलाओं को इकट्ठा करना, गोष्ठी में मुझे भी बुलाना। हम तुम्हारे गाँव में शिक्षण केन्द्र की व्यवस्था करने की कोशिश करेंगे।''

इस बार महिला सम्मेलन बहुत अच्छा हुआ। महिलाओं ने बहुत योगदान दिया। जो महिला मंच में बोलना नहीं चाहती थी, अन्य लोगों को देखकर उस के मन में भी अपने विचार व्यक्त करने की इच्छा हुई। इस तरह अनेक महिलाओं ने अपने विचार रखे। महिला सम्मेलन में हर गाँव की महिलाओं ने कार्यक्रम किये। ये कार्यक्रम सभी को पसंद आये। सबसे ज्यादा तो यह पसन्द आया कि महिलाओं ने अपने संस्कृति को दिखाया। कुमाऊँनी पिछौड़ा पहन कर झोड़ा गाया और जन–जागरूकता के संदेश से भरे नाटक किये। मुझे सबसे ज्यादा खुशी इस बात की रही कि महिलाओं ने कार्यक्रम खुद सोचकर किये। पहले तो शिक्षिकाओं या मार्गदर्शिका को कार्यक्रम करने के लिये महिलाओं को तैयार करना पड़ता था। इस बार महिलाओं ने कार्यक्रम खुद तय किया और स्वयं प्रस्तुत किया।

महिलाओं में बदलाव आ रहा है। इस बार गाँव की गोष्ठी में संगठन की सदस्याओं का कहना था कि अगले वर्ष पहले से भी ज्यादा अच्छा कार्यक्रम करेंगे। सभी गाँवों की महिलाओं के अलग–अलग कार्यक्रम रखे जायेंगे।

अपने गाँव रौलमेल की महिलाओं का उदाहरण दे रही हूँ। हमारे गाँव की महिलाएं मजदूरी करने के लिये जाती हैं। मैं हर महीने के पहले सोमवार को गोष्ठी कराती हूँ। महिलाएं गोष्ठी में आती भी हैं। इस बार मैंने महिलाओं को सम्मेलन में जाने के लिए तैयार किया था। बैठक के अगले दिन महिलाओं ने अपनी समस्या बता दी कि वे काम करने जायेंगी। मैंने उन्हें जागरूक करते हुए कहा कि एक दिन हम को दे सकते हो, अपने आपको दे सकते हो। साल में अन्य सभी दिन काम करने जाते हो तो एक दिन कुछ अलग बातें भी सीखो। अन्य गाँवों की महिलाओं को देखकर अपने विचार रखो। अन्य महिलाओं के विचारों को सुनो, कुछ नयी बातें सीख पाओगे। तब हमारे गाँव की महिलाओं ने चर्चा करते हुए कहा कि यह ठीक कह रही है।

तदुपरान्त गाँव की चार–पाँच महिलाएं सम्मेलन में भाग लेने के लिये तैयार हुई। धीरे–धीरे गाँव से पच्चीस–तीस महिलाएं तैयार हो गयी। अब हमें गाड़ी की समस्या हो गयी। महिलाओं ने कहा कि अगर गाड़ी की व्यवस्था नहीं

हो रही है तो हम पैदल चले जायेंगे। फिर संस्था प्रमुख द्वारा तीन जीपें भेजी गयीं। इस तरह महिलाओं ने सम्मेलन के कार्यक्रमों में हिस्सा लिया। बहुत सी महिलाओं ने भाषण दिये, अपने विचार रखे। मेरे गाँव की महिलाओं ने बताया कि कैसे जंगली जानवर हमारी फसलों को नुकसान पहुँचा रहे हैं। गाँव में तार–बाड़ की जरूरत पर चर्चा की। महिला सम्मेलन में सभी महिलाओं ने अपनी–अपनी समस्याएं रखीं।

बहुत सी महिलाओं ने कहा कि हमने मंच से बोलना उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान अल्मोड़ा से सीखा है। हम गोष्ठियों में भाग लेने के लिये अल्मोड़ा जाते हैं। वहाँ का रहन–सहन बहुत अच्छा लगता है। हम संस्था से किसी न किसी माध्यम से जुड़े हुए हैं। जैसे–कोई सिलाई, कोई कम्प्यूटर, तो अन्य ग्राम शिक्षण केन्द्र के माध्यम से जुड़े। हम केन्द्रों से ऐसे ही जुड़े रहना चाहते हैं। महिलाओं ने कहा कि किसी भी केन्द्र को बन्द ना किया जाये। महिलाओं ने ग्राम शिक्षण केन्द्रों की बहुत प्रशंसा की। सम्मेलन में अतिथियों के लिए खाने की व्यवस्था भी अच्छी हुई थी। इस प्रकार हमारा महिला सम्मेलन संपन्न हुआ।

◆◆●◆◆

संगठनों में जोश और उत्साह है

रचना नेगी

मैं गढ़वाल मंडल के चमोली जिले में स्थित एक सुंदर से गाँव, जाख, में रहती हूँ। मुझे ग्राम शिक्षण केन्द्र चलाते हुए आठ साल हो गये हैं। अब पिछले तीन महीने से मार्गदर्शिका का काम कर रही हूँ। मैं चार ग्राम शिक्षण केन्द्र, एक कम्प्यूटर केन्द्र और एक सिलाई केन्द्र को देखने का काम करती हूँ। इसी के साथ किशोरी संगठन और महिला संगठनों के साथ काम कर रही हूँ। पाँच गाँवों में किशोरी संगठन और इन्हीं गाँवों में महिला संगठन हैं। इस के अतिरिक्त आसपास के सभी गाँवों के महिला संगठन भी संस्था से जुड़े रहते हैं।

मुझे दूसरे गाँवों में जाकर संगठनों के साथ बात करने का कोई अनुभव नहीं था। संगठन में अपने गाँव की महिलाओं के साथ विभिन्न विषयों पर बात करने का तरीका मालूम था क्योंकि वे सभी मुझे जानती थी। वे मेरी बातें सुन लेती थी। इस कारण अपने गाँव में महिला संगठन के साथ बातें करने में ज्यादा कठिनाइयों का सामना नहीं करना पड़ा। अन्य संगठनों के साथ क्या बात करनी है, कैसे बात करनी है, इसका कोई अनुभव नहीं था। जब मैंने अल्मोड़ा में प्रशिक्षण लिया तो मुझे संगठनों के साथ बात करने का तरीका पता चला। गाँव में बैठक की शुरूआत करने का तरीका भी सीखा। चूंकि हर एक गोष्ठी में विभिन्न मुद्दों पर बात कर सकते हैं, इस के लिये भिन्न–भिन्न सामग्री का उपयोग किये जा सकते हैं, यह भी सीखा। जैसे, गोष्ठियों में चर्चा के बीच कहानियाँ सुनाना। इसके साथ ही, किसी गाँव में घटित हुई घटना का वर्णन करने से महिलाओं का ध्यान मुद्दे पर केन्द्रित हो जाता है। चर्चा के विषय से संबंधित घटनाओं को बताना भी एक कौशल है।

महिला सम्मेलन का आयोजन करने के लिए हमें सबसे पहले गाँव में गोष्ठी करनी पड़ती है। गोष्ठी में बात की जाती है कि सम्मेलन में विभिन्न मुद्दे किस तरह से कहे जायेंगे। ये सभी चर्चाएं महिलाओं, संस्था सचिव व मार्गदर्शिका के द्वारा आपस में की जाती हैं। उसके बाद महिलाएं अपने गाँवों में शिक्षिकाओं के साथ तैयारियाँ करती हैं। शिक्षिकाएं भी उन्हें पूरा समय देती हैं। संस्था सचिव और शिक्षिकाओं के साथ बैठक कर के यह निर्णय लिया जाता है कि सम्मेलन का स्थान किस गाँव में रहेगा। सभी शिक्षिकाओं को कार्य बाँट दिये जाते हैं। जिस गाँव में महिला सम्मेलन होता है वहाँ पर संगठन के साथ

तीन–चार बैठकें की जाती हैं। गाँव में सम्मेलन का स्थान, कार्य व संगठन की तरफ से योगदान पर चर्चा होती है।

शिक्षिका स्वयं महिलाओं के साथ मिलकर सम्मेलन की तैयारी करती है। किसी गाँव में शाम को तो किसी गाँव में समय न मिलने पर रात को महिला सम्मेलन की तैयारी होती है। ज्यादातर महिलाओं के यही मुद्दे रहते हैं कि जंगली जानवर फसलों को बहुत नुकसान पहुँचा रहे हैं। इस कारण लोगों का ध्यान खेती से पलायन की ओर जा रहा है। इस वर्ष एक अहम मुद्दा यह भी रहा है कि पंचायतों के चुनाव में ग्रामवासी सही व्यक्ति का चुनाव नहीं कर पाते हैं।

महिलाएं सम्मेलन में विभिन्न मुद्दों पर बात रखने का अभ्यास करती हैं। साथ ही, नाटकों के माध्यम से लोगों को जागरूक करने का संदेश देती हैं। सम्मेलन में संस्था द्वारा महिलाओं के लिए किये गये प्रयासों के बारे में भी विस्तारपूर्वक बताया जाता है।

इस बार का महिला सम्मेलन ग्राम चौण्डली के प्राथमिक विद्यालय के सुंदर से प्रांगण में रखा गया था। सभी महिलाएं प्रांगण में ग्यारह बजे उपस्थित हुई तथा सम्मेलन का शुभारम्भ किया। महिलाओं में काफी जोश और उत्साह दिखायी दिया।

सम्मेलन में एक–एक कर के महिलाएं अपनी बातें रख रही थी। महिलाओं ने अनेक मुद्दे सभी प्रतिभागियों के सामने रखे। संस्था द्वारा सिलाई सिखाई गयी। जिस में कम से कम नौ गाँव के लोगों ने सिलाई सीखी और इसे रोजगार का माध्यम बनाया है। कुछ महिलाओं ने कहा कि उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान के माध्यम से उन्हें एक महिला–केन्द्रित खुला मंच मिला। इस कारण वे बिना डरे और हिचकिचाये अपनी बातों को सभी के सामने रख सकी हैं। उन के साथ अन्याय होता है तो आवाज उठाती हैं।

कुछ महिलाओं ने कहा कि ग्राम शिक्षण केन्द्र खुलने से बच्चों में बहुत बदलाव देखने को मिला है। वे संस्था का धन्यवाद कर रही थीं। कुछ गाँवों की महिलाओं ने नाटकों के माध्यम से बताया कि हम पंचायती चुनाव या विधायकों में सही व्यक्ति का चुनाव नहीं कर पाते और बाद में हमें नुकसान उठाना पड़ता है। वे नाटक के माध्यम से यह बताना चाहती थी कि एक अच्छे उम्मीद्वार में कौन सी योग्यताएं होनी चाहिए कि वह जनता का प्रतिनिधित्व करने के साथ–साथ सरकारी योजनाओं का लाभ गाँवों में दिला सके।

कुछ गाँवों की महिलाओं ने यह नाटक किया कि लड़कियाँ गाँव में शादी न कर के शहरों में रहना चाहती हैं। कहती हैं कि लड़के की सरकारी नौकरी होनी चाहिए तभी शादी करेंगी। इस कारण समाज में बहुत उथल–पुथल हो रही है।

अधिकांश गाँव की महिलाओं ने एक अत्यंत महत्वपूर्ण मुद्दा उठाते हुए कहा कि जंगली–जानवर फसलों को नुकसान पहुँचा रहे हैं। महिलाएं जंगली जानवरों के आतंक से बहुत दुःखी और भयभीत हैं। ग्रामीणों ने अपने प्रयासों से समस्या के समाधान के लिए कई सारी योजनाएं भी बनायी। सबसे ज्यादा नुकसान बंदर करते हैं। बंदरों और सुअरों को गाँव से दूर करने के लिए सभी महिलाएं बहुत से प्रयास कर रही हैं पर ये सभी विफल हो रहे हैं।

कुछ महिलाएं अल्मोड़ा में हुई कार्यशाला के बारे में बोल रही थीं। उन्होंने बताया कि अल्मोड़ा में अन्य संगठनों की सदस्याओं से उन्होंने जो सीखा उसे अपने गाँव के संगठन में उतारने के लिये प्रयास कर रही हैं।

कुछ महिलाओं ने कहा कि संस्था द्वारा बच्चों को कम पैसे में कम्प्यूटर सिखाया जा रहा है। गाँव में ही कम्प्यूटर केन्द्र खुला है। इस से बच्चे अपने ही गाँव में कम्प्यूटर सीख रहे हैं। गाँव के सभी बच्चे इसका लाभ उठा रहे हैं। इस कारण बच्चों को कम्प्यूटर सीखने गाँव से बाहर नहीं जाना पड़ता। इस से पैसे और समय की बचत हो रही है। अभिभावक भी निश्चिंत रहते हैं क्योंकि उन्हें संस्था के ऊपर विश्वास है।

उसके बाद स्वास्थ्य विभाग में आशा का कार्य कर रही महिलाओं ने अपने काम तथा उन्हें सरकार के द्वारा जो पैसा मिलता है, उस पैसे से गाँव के लिए जो सामान लाते हैं, इस का विवरण दिया। सम्मेलन में जब महिलाएं बिना डरे अपनी बातों को सभी के सामने रखती हैं तो बहुत अच्छा लगता है। वे संस्था को पूरा सहयोग देती हैं। अपनी बातों को भी संस्था तक पहुँचाती है।

इस तरह सभी गाँवों से आयी हुई महिलाओं ने अपनी बातों को रखा। उसके बाद सभी महिलाएं चाय और समोसे का आनन्द ले कर वापस अपने गाँवों की ओर चलीं। अतिथियों के जाने के बाद चौण्डली गाँव के महिला संगठन ने स्कूल का पूरा प्रांगण साफ किया। संगठन का सामान संभाल कर वे अपने घरों को वापस आयीं। महिला सम्मेलन में महिलाओं का खुल कर बोलना, अपनी बातों को रखना, नाटकों और गीतों के माध्यम से गाँवों की समस्याओं को रखना यह बताता है कि महिला संगठन में एकता है और वे अपने–अपने संगठनों में बहुत काम कर रही हैं।

◆◆●◆◆

कुछ नया करने की चाह

शान्ति रावत

मेरा जन्म उत्तराखण्ड के अल्मोड़ा जिला के भिक्यासैंण ब्लॉक के बैंगण गाँव में हुआ। हमारे गाँव में उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान व सीड संस्था द्वारा बालवाड़ी खोली गयी। इसकी मार्गदर्शिका भगवती दीदी थी। भगवती दीदी द्वारा मेरा चयन बालवाड़ी की शिक्षिका के रूप में किया गया। सन् 1980–1990 के समय में छोटे–छोटे बच्चों के लिए शिक्षा का कोई साधन नहीं था। दूर गाँवों में न आंगनवाड़ियाँ थी और न ही पाँच साल से पहले छोटे बच्चों को स्कूल में आने देते थे।

जब हमारे गाँव में बालवाड़ी खुली तो महिलाएं अपने छोटे–छोटे बच्चों को बालवाड़ी में पहुँचा देतीं। स्वयं खेतों में काम करने जाती। मैं छोटे–छोटे बच्चों को भावगीत, मिट्टी का कार्य, रचनात्मक कार्य कराती। कभी बच्चों को कागज की जंजीर बनाकर माला बनाने को कहती। तीन साल से छः साल तक के बच्चे बालवाड़ी में आते थे। सुबह के समय वे अपने लिए भोजन लाते थे। बच्चों को खेल–खेल में छोटी–छोटी गतिविधियाँ कराती थी। कभी बच्चों की आमा (नानी–दादी) भी बालवाड़ी केन्द्र में आती थी। उस समय मोबाइल फोन का प्रसार नहीं था। लैण्डलाइन वाला फोन ही उपलब्ध होता था।

जब शिक्षिकाओं की गोष्ठी होती तो मार्गदर्शिका भगवती दीदी हमारे लिए पत्र लिखकर भेजती। उसी पत्र को पढ़कर शिक्षिकाएं गोष्ठी के लिये जातीं। वहाँ पर नये–नये भावगीत व अन्य गतिविधियाँ होती। संगठन के माध्यम से महिलाएं बहुत जागरूक हुईं। साल में एक बार उत्तराखण्ड महिला परिषद् का सम्मेलन होता। संगठन की महिलाएं लगभग चौदह–पन्द्रह किलोमीटर की दूरी तय करके पैदल सम्मेलन में जाती। सम्मेलन में बढ़चढ़ कर अपनी भागीदारी निभाती। अपने संगठन में हो रहे कार्यों का मंच में जाकर खूब खुलकर प्रचार–प्रसार करती थीं।

लगभग पच्चीस–तीस गाँवों की महिलाएं उत्तराखण्ड महिला परिषद् के सम्मेलन में अपनी–अपनी बातें रखती थीं। महिलाओं में इतना जोश था कि वे सामान्य सीट से भी प्रधान पद के लिये चुनाव लड़ी और आगे जाकर प्रधान बनीं। निर्विरोध प्रधान पद के लिये चुनी गयीं। प्रधानों की अध्यक्ष भी रहीं। गाँवों में शादी–विवाह से लेकर शराब की दुकानों को बन्द कराने में महिलाओं का पूरा सहयोग रहा। महीने में बैठक की एक निश्चित तारीख तय होती। बारी–बारी से

हर एक महिला के घर में बैठक की जाती थी। संगठनों के माध्यम से महिलाएं प्रधान, क्षेत्र पंचायत सदस्य, जिला पंचायत सदस्य व विधायक तक के चुनाव लड़ने लगी। महिलाओं में जो उत्साह था वह सब उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान, अल्मोड़ा के साथ जुड़ने से ही संभव हुआ।

सन् 2008 में महिला एकता परिषद् से मार्गदर्शिका हेमा नेगी दीदी विधायक पद के लिये चुनाव लड़ने को आगे बढ़ीं। एक गरीब परिवार से बिना पैसों के एक बालवाड़ी शिक्षिका ने विधायिका का चुनाव लड़ने की हिम्मत दिखायी। वह बिना किसी पार्टी के सहयोग से निर्दलीय उम्मीद्वार बन कर चुनाव लड़ीं। नशाबन्दी व पर्यावरण के नारे भी लगाये। महिलाओं में बड़ा जोश दिखायी दिया।

2007 में मेरी शादी द्वाराहाट ब्लॉक के सुरना गाँव में हुई। शादी के बाद सुरना गाँव में सब कुछ नया था। कृषि के काम से लेकर जंगल जाना आदि सभी काम नया था। सुरना में महिलाओं को खेती बाड़ी, जंगल से बहुत लगाव था। उसके बाद पढुला गाँव की हेमा की शादी भी सुरना गाँव में हो गई। हम दोनों ने मिलकर महिला संगठन बनाये। उसके बाद सन् 2013 में सामान्य सीट से पंचायत चुनाव लड़ी। इस चुनाव में चार पुरूष और एक अकेली महिला उम्मीद्वार बनी। गाँव बड़ा होने के कारण चुनाव में मैं प्रधान पद के लिये पराजित हुई।

हमारी प्रमुख एवं मार्गदर्शिका माया जोशी दीदी ने मुझसे सुरना गाँव में ग्राम शिक्षण खोलने के लिए कहा। उसके बाद माया बोरा, किरन आर्या, ज्योति पाण्डे और मैं ग्राम शिक्षण केन्द्र का प्रशिक्षण लेने के लिए अल्मोड़ा गये। मुझे ससुराल से भी अल्मोड़ा जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इस इलाके में भी उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान के माध्यम से गाँवों में जाकर सम्पर्क करने का मौका मिला। मैंने इस बार भी क्षेत्र पंचायत का चुनाव लड़ने की सोची पर हमारे ही गाँव के दो उम्मीद्वार थे। इस कारण मैंने उम्मीद्वार न होने का मन बना लिया।

इस प्रकार, बिन्ता–सुरना क्षेत्र में महिलाएं और किशोरियाँ निरंतर एक उत्थान के पथ पर अग्रसर हुई हैं। स्त्रियों ने गाँवों में एकजुट हो कर अनेक विकास के कामों को आगे बढ़ाया है। वे स्वाभिमान के साथ एक–दूसरे की मदद करती हुई आगे बढ़ रही हैं। आज हमारे क्षेत्र में महिला संगठन सक्रिय बने रहते हैं। संगठनों की सदस्याएं स्वयं और अपने बच्चों के शिक्षण के प्रति अत्यंत संवेदनशील है और चुनौतियों से लड़ने का साहस रखती है।

◆◆●◆◆

प्रथम प्रशिक्षण का अनुभव

हिमानी आर्या

मैं ग्राम शिक्षण केन्द्र पूनाकोट में शिक्षिका हूँ। मेरा प्रथम प्रशिक्षण उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान, अल्मोड़ा में हुआ। जो माह मार्च में पच्चीस–उन्तीस तारीख 2025 को हुआ। मैं अपनी अन्य साथी शिक्षिकाओं के साथ चौबीस मार्च, 2025 को पाटी से अल्मोड़ा के लिए रवाना हुई। पहले मुझे बहुत घबराहट हो रही थी। मैं पहली बार अपने घर से दूर जा रही थी। मेरे डर को कम करते हुए साथी शिक्षिकाओं ने बताया कि प्रशिक्षण में नयी–नयी जानकारी मिलेगी, नये कौशल सीखेंगे। फिर भी मुझे डर लग रहा था किंतु अल्मोड़ा देखने का मन भी कर रहा था।

जब हम अल्मोड़ा पहुँचे तो मुझे बहुत अच्छा लगा। वहाँ हमारे उत्तराखण्ड के दोनों मण्डलों, कुमाऊँ और गढ़वाल, से अन्य शिक्षिकाएं आई हुई थीं। प्रथम दिन तो मैंने उनसे बात नहीं की किन्तु दूसरे दिन से हम लोग आपस में घुलने–मिलने लगे।

पच्चीस मार्च को प्रशिक्षण का प्रथम दिन था। उस दिन मैं सुबह साढ़े पाँच बजे उठ गयी। हम लोगों ने अपने कमरों की सफाई की। आठ बजे सभी शिक्षिकाएं प्रशिक्षण हाल में उपस्थित हुई। सभी ने प्रार्थना की। ऐसी प्रार्थना मैंने पहले कभी नहीं सुनी थी। पहले मुझे प्रार्थनाएं नहीं आती थी किंतु मुझे यह प्रार्थना बहुत अच्छी लग रही थी। उसके बाद हमने योगा किया। कई भाव–गीत किये। उसके उपरान्त हमने नाश्ता किया। उसके बाद हमारा विषयानुसार प्रशिक्षण शुरू हुआ। हमें शिक्षण केन्द्र के संचालन के लिये विभिन्न विषयों में प्रशिक्षण दिया गया। जैसे कि खेल–खेल में शिक्षण का तरीका सीखा। मैंने वहाँ पर कई प्रकार की कहानियाँ पढ़ीं। मौन–पाठन के साथ ''खेल–खेल में'' पुस्तिका से कई गतिविधियों को समझाया गया।

द्वितीय दिवस को हिंदी भाषा शिक्षण में अक्षर वर्ग में शब्दों की खोज, बुझो मैं कौन? बाजार और हम, कहाँ क्या–क्या मिलेगा आदि अभ्यास किये। गतिविधियों के बीच–बीच में कई भाव–गीत भी सिखाये गये। प्रशिक्षण में मुझे बहुत अच्छा लग रहा था। यहाँ पर सभी लोग बहुत अच्छे थे।

तृतीय दिवस में हमारे ग्रुप की रिर्पोटिंग थी। मेरे ग्रुप का नाम था मिलम। हमने सुबह से लेकर शाम तक के प्रशिक्षण की कार्यवाही की रिर्पोटिंग की। रिर्पोटिंग करने का यह मेरा पहला अनुभव था। रिपोर्ट लिखने के बाद हमने इसे सभी प्रशिक्षार्थियों और प्रशिक्षकों के सामने प्रस्तुत किया।

प्रशिक्षण में हमने पर्यावरण से सम्बन्धित गतिविधियाँ की। मुझे यह बहुत अच्छा लगा। यहाँ मैंने कई भाव–गीत सीखे। पहले पता नहीं था कि भावगीत क्या होता है। इसके अतिरिक्त मैंने रचनात्मक कार्य भी सीखे जैसे कागज की नाव, जहाज, पंखा, टोपी, चटाई बनाना।

मेरा प्रथम प्रशिक्षण का अनुभव बहुत ही यादगार और अच्छा रहा। प्रशिक्षण के पाँचवे दिन हमने गाँव से जुड़ने के तरीके सीखे। ग्राम शिक्षण केन्द्र

बच्चों के साथ–साथ किशोरियों और महिला संगठन का केन्द्र है। प्रशिक्षण के अंतिम चरण में हमने मूल्यांकन किया। प्रशिक्षण का मूल्यांकन होने से अगले प्रशिक्षण को बेहतर बनाने में मदद मिलती है। हम उन्तीस मार्च को अल्मोड़ा के निकट स्थित कसारदेवी मंदिर घूमने गये। वहाँ जाकर मुझे बहुत अच्छा लगा। इस प्रशिक्षण की वजह से मैंने अल्मोड़ा शहर और अल्मोड़ा जिले को पहली बार देखा।

◆◆●◆◆

मेरा गाँव

रितु आर्या

मेरे गाँव का नाम मनीआगर है। हमारे गाँव के चारों ओर जंगल हैं। गाँव के बीच में एक मंदिर बना है। हर वर्ष यहाँ से सावन माह में जागेश्वर मंदिर तक यात्रा की जाती है। ग्रामवासी मनीआगर से पैदल चलकर जागेश्वर मंदिर तक जाते हैं। वहाँ से वापस आकर फिर से मंदिर में पूजा की जाती है। रात को सभी ग्रामवासी मिलजुल कर पुनः भजन–कीर्तन करते हैं।

हमारे गाँव के लोग नौकरी करने के लिए बाहर शहरों की ओर जाते हैं। नौकरी कर के अर्जित किये गये धन से घर का खर्चा चलाते हैं। अगर गाँव के लोग घर पर रहें तो यहाँ पैसा कमाने का कोई साधन नहीं है। पुरूषों के लिए आमदनी का कोई ठोस जरिया नहीं है। लोग कृषि करके अपना गुजारा करते हैं लेकिन जंगली जानवर फसलें होने नहीं देते। कृषि करके भी लोगों को कोई फायदा नहीं है। लोग मेहनत करके खेतों में बीज बोते हैं पर जंगली जानवर मुख्यतः बन्दर और सुअर, उनकी फसलों को नष्ट कर देते हैं। बेचने के लिए तो कहाँ से हो? स्वयं खाने के लिए भी अनाज या दालें पूरी नहीं होती। हमारे गाँव के सभी परिवार अनाज व दालें दुकानों से ही लाते हैं। सब्जियाँ भी दुकानों से खरीदते हैं। लोग मेहनत से खेती–बाड़ी करते तो हैं पर जंगली जानवर उनकी मेहनत पर पानी फेरने में जरा भी देर नहीं करते हैं। जो लोग कम पढ़े–लिखे हैं उन्हें शहरों में भी नौकरी नहीं मिलती। वे होटलों या छोटी कम्पनियों में काम करते हैं।

उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान, अल्मोड़ा द्वारा इस क्षेत्र में महिलाओं व किशोरियों के विकास के लिये अनेकानेक कार्यक्रम संचालित होते हैं। हमारे गाँव में पहले से कोई बैठक नहीं होती थी क्योंकि संगठन नहीं बने थे। गाँव की महिलाएं कहीं भी मीटिंग में नहीं जाती थी। जब संस्था द्वारा हमारे गाँव में बालवाड़ी केन्द्र खोला गया तब धीरे–धीरे गाँव का विकास शुरू हुआ। बच्चे बालवाड़ी में पढ़ने के लिये जाते थे। वहाँ बच्चों को अच्छा लगता था। भावगीत, खेल और रचनात्मक कार्य कराये जाते थे। अगर बालवाड़ी नहीं होती तो बच्चे यूँ ही इधर–उधर घूमते, उन का शिक्षण नहीं हो पाता। धीरे–धीरे संस्था द्वारा ग्राम शिक्षण केन्द्र, सिलाई–बुनाई, कम्प्यूटर व ब्यूटी पार्लर प्रशिक्षण केन्द्र खोले गये। इन केन्द्रों का उद्देश्य है कि महिलाएं व किशोरियाँ आगे

बढ़ें। अगर महिलाएं व किशोरियाँ सिलाई नहीं सीख पाती तो न वे घर से बाहर काम करने जा सकती थीं और न ही उनकी अपनी कोई आमदनी होती।

संस्था द्वारा महिलाओं व किशोरियों का जुड़ाव धीरे–धीरे हुआ। कई महिलाएं व किशोरियाँ इस संस्था से जुड़ी। संस्था द्वारा महिलाओं को कैसे आगे बढ़ा सकते हैं इस विषय पर गोष्ठी करायी गयी। पहले गोष्ठियों में कम महिलाएं आयी। धीरे–धीरे महिलाएं नियमित रूप से बैठकों में आने लगीं। गोष्ठी हर महीने पाँच तारीख को की जाती है। संगठन की बैठकों में गाँव की समस्याओं, सरकारी योजनाओं व जंगली जानवरों के आतंक के बारे में बातें की जाती हैं। महिलाएं पहले से इधर–उधर गोष्ठियों में नहीं जाती थीं। ग्रामवासी किसी के सामने अपनी बातें खुलकर नहीं रख पाते थे। इन बैठकों के कारण उन्हें बोलने व सब के सामने अपनी बातें रखने का मौका मिला। गाँव में चर्चा हुई कि एक समस्या यह है कि सरकार से योजना आती है तो महिलाओं को पता नहीं चल पाता। इस पर बात करने से सभी को फायदा हुआ। गोष्ठी के कारण ही महिलाओं को पता चला कि एकजुट होकर गाँव में कार्य किये जाते हैं।

हमारे गाँव में पानी की बड़ी समस्या है। लोग पानी लाने दूर–दूर तक जाते हैं। गर्मी के मौसम में सुबह से शाम तक का समय पानी लाने में ही चला जाता है। अब हम सब एकजुट होकर बैठकों में चर्चा कर रहे हैं कि ऐसी समस्याओं को दूर करें। गाँव में तीन नौले हैं। गर्मियों में सभी नौलों का पानी सूख कर बहुत ही कम हो जाता है। एक नौला तो पूरा ही सूख जाता है। महिलाओं ने यह बात गोष्ठी में रखी। संस्था ने इस समस्या को कम करने की कोशिश की। बताया कि चाल–खाल बना सकते हैं। इसमें सभी ग्रामवासी अपना–अपना योगदान देंगे। अगर गोष्ठी नहीं होती तो हम कभी भी इस बात पर चर्चा नहीं कर पाते।

उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान अल्मोड़ा में महिलाओं की बैठकें और प्रशिक्षण होते हैं। विभिन्न संस्थाओं से महिलाएं अल्मोड़ा आती हैं, अपने–अपने गाँवों और संगठनों के बारे में बताती हैं। चर्चा करती हैं कि वे गाँव में एकजुट होकर अनेक कार्य कर सकती हैं। महिलाओं का खाना, रहना, यात्रा व्यय इत्यादि का खर्च संस्था द्वारा किया जाता है। संस्था में सभी लोग गाँव की महिलाओं को जागरूक करने और आगे बढ़ाने के लिए अनेक प्रयास करते हैं। महिलाएं अलग–अलग गाँवों की बातें सुनती हैं। इन गोष्ठियों से हमें पता चला कि उत्तराखण्ड में अनेक महिला संगठन बारी लगाकर गाँव से जंगली जानवरों जैसे बंदर, सुअर, लंगूर इत्यादि को भगा रहे हैं ताकि उनकी फसलें, सब्जियाँ आदि खेतों में सुरक्षित रहे। अन्य इलाकों की स्त्रियों की बातें सुनकर हमारे संगठन की सदस्याओं को भी साहस मिलता है।

जब महिलाएं अल्मोड़ा गयीं तभी उन्हें बाहर समाज के सामने बातें रखने का मौका मिला। अल्मोड़ा गोष्ठी में आने वाली अनेक महिलाओं की भाषा व रीति–रिवाज हम से फर्क हैं। मनीआगर गाँव की महिलाएं अलग–अलग लोगों से मिली। उन सभी महिलाओं की बातें सुनकर हमारे गाँव की महिलाओं का उत्साह बढ़ गया। वे भी सोचने लगीं कि हम अपने गाँव में एकता से रहें और एकजुट होकर कार्य करें। साथ ही, इन बैठकों के कारण महिलाओं को घर–गाँव से बाहर जाने का मौका मिला।

उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान द्वारा केवल बच्चों के साथ ही कार्य नहीं किये जाते अपितु संस्था का जुड़ाव महिला, बुजुर्ग, किशोर–किशारियों सभी से है। समय–समय पर किशोरियों की गोष्ठियाँ की जाती है। गोष्ठी में किशोरियों को भेदभाव व हिंसा के बारे में बताया जाता है। किशोरियों और महिलाओं की गोष्ठियाँ अलग होती है। गोष्ठी में भाग लेने से महिलाओं और किशोरियों में बहुत अन्तर देखने को मिला। वे बिना झिझक के अपनी बातें रख सकती है। नवयुवतियाँ सिलाई सीख कर पैसे कमा रही हैं। हम सब मिल कर अपने गाँव में अनेक समस्याओं को दूर कर सकते है। एकता होना बहुत जरूरी है। एक होंगे तो सब में हिम्मत होगी।

◆◆●◆◆

आयवृद्धि के लिए प्रयास

कौशल्या रौतेला

मेरे गाँव का नाम धारी गोगिना, जिला बागेश्वर, है। यह गाँव बागेश्वर जिला मुख्यालय से पचहत्तर किमी. की दूरी पर स्थित है। गाँवों में महिलाओं की आय–वृद्धि के लिए अनेक साधन हैं। इन कामों से महिलाओं को उचित दाम मिल सकता है परन्तु अब लोग खेती का कार्य करने के लिए इच्छुक नहीं हैं।

हमारे गाँव में पहले जहाँ अनाज उगाते थे, अब घास उगायी जाती है। गाँव में आलू, सोयाबीन, चौलाई, मडुवे की खेती तो होती है परन्तु बेचने के लिए बागेश्वर ले जाना पड़ता है। बेचने से प्राप्त हुई आय गाँव से बागेश्वर आने और जाने के लिये खरीदे जाने वाले टिकट के बराबर हो जाती है। इस कारण किसान को कोई खास लाभ नहीं होता।

इन सभी चुनौतियों के बावजूद महिलाएं बहुत कोशिश में लगी हुई हैं। वे आँगनवाड़ी शिक्षिका, आशा कार्यकर्त्ता, वार्ड सदस्य, प्रधान, क्षेत्र पंचायत तथा संगठनों के अध्यक्षाएं बनी हैं। वे उत्तराखण्ड महिला परिषद् से जुड़कर एक बड़े संगठन का रूप लेती हैं और शासन–प्रशासन में अपनी बातों को रखने की क्षमता विकसित करती हैं। किशोरियाँ गोष्ठियों, सम्मेलनों और विद्यालयों में उपलब्ध अनेक कार्यक्रमों से जुड़ कर आत्मविश्वासी हो रही हैं। किशोरियाँ शादी के उपरान्त जहाँ भी जा रही हैं, इन कार्यक्रमों के प्रभाव से वहाँ पर भी सामाजिक कार्यों और रोजगार–परक काम के लिए आगे आ रही हैं।

आज नवयुवतियाँ आत्म–विश्वास के साथ समाज में कार्य कर रही हैं। महिलाएं कई प्रकार के रोजगार अपना कर समाज में अपनी उपस्थिति दर्ज कर रही हैं। गोगिना क्षेत्र में लगभग सभी घरों में गायें या भैसें हैं। महिलाएं दूध बेचने का कार्य तो नहीं कर सकती हैं क्योंकि कोई व्यवस्था नहीं हुई परन्तु घी बना कर बेचती हैं। आजकल महिलाएं घर में अचार भी बना रही हैं। वे अपना खर्चा बचा ले लेती हैं। हर रसोईघर में मसाले की जरूरत होती है। इस कारण महिलाएं हल्दी, मिर्च, धनिया, लहसुन आदि घर में उगा कर मिक्सी या सिलबट्टा में पीस कर पाउडर बनाकर मसाला तैयार करती हैं ताकि धन की बचत हो और घर की आवश्यकताएं भी पूरी हो जायें। कुछ मसाले छोटी–मोटी बीमारियों में भी काम आते हैं। हल्दी मिर्च, लहसुन आदि मसालों का उपयोग विभिन्न प्रकार के रोगों के इलाज के लिये किया जाता है। आजकल बाजार में शुद्ध मसाले मिलना मुश्किल है लेकिन गाँवों में यह व्यवस्था हो जाती है।

आय–वृद्धि से जहाँ महिलाएं आत्मनिर्भर बन रही हैं वहीं समाज में एक शक्ति के रूप में उभर कर सामाजिक पहचान भी बना रही हैं। ऐसा कोई क्षेत्र नहीं जहाँ महिलाओं ने छाप न छोड़ी हो। चाहे वे कार्यक्रम संस्था या उद्योग के हों या शिक्षा के कार्य हों, महिलाओं ने हर क्षेत्र में पहचान बनायी है। आय–वृद्धि से महिलाओं को छोटी–छोटी जरूरतों के लिए किसी पर निर्भर नहीं रहना पड़ता। वे अपनी जरूरतों को स्वयं पूरा कर सकती हैं।

◆◆●◆◆

बन्दरों को भगाने की बारी लगायी

काजल बिष्ट

चमोली जिले के मुख्यालय गोपेश्वर से पाँच किमी. की दूरी पर मेरा गाँव ग्वाड़ स्थित है। परिवार में छः सदस्य हैं। माँ–पापा, दादी, छोटी बहन और भाई है। मेरे पापा दुकान में रहते हैं और माँ गृहणी है। छोटी बहन कॉलेज के साथ–साथ कोचिंग करती है। भाई बारहवीं कक्षा में पढ़ता है। मैं बी.ए. की पढ़ाई राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय गोपेश्वर से कर रही हूँ।

हमारा गाँव बहुत बड़ा है। गाँव में डेढ़ सौ से अधिक परिवार हैं। लगभग ढ़ाई सौ से अधिक महिलाएं होंगीं लेकिन कुछ परिवार बाहर रहते हैं। रोजगार, अच्छी स्वास्थ्य–सुविधा व बच्चों को शिक्षा के लिए लोग गाँव से बाहर चले गये हैं। जब गाँव में कुछ सामुहिक कार्य होता है तो सभी लोग घर वापस आते हैं। मेरे गाँव में महिलाओं का एक सक्रिय संगठन है। संगठन की अध्यक्षा भी बहुत ही सक्रिय व जागरूक है। उन्होंने इस संगठन की मजबूती के लिये बहुत से कार्य किये हैं।

गाँव में खेती की कुल जमीन लगभग हजार नाली होगी। हमारे गाँव में मुख्य रूप से धान, गेहूं, मडुआ, झंगोरा, सरसों की खेती की जाती है। इसके अलावा सब्जियों में आलू, मूली, बैगन, मटर, राई, धनिया, प्याज आदि सब्जियाँ उगायी जाती है। फलों में माल्टा सबसे अधिक होता है।

ग्रामवासी दुग्ध उत्पादन में ज्यादा ध्यान देते हैं। ग्वाड़ गाँव से गोपेश्वर का बाजार नजदीक है, इस कारण लोग दूध बेचते हैं। उनकी अच्छी कमाई हो जाती है। मैं सुबह साढ़े पाँच बजे उठती हूँ। फिर हाथ मुंह धोकर सड़क में दूध पहुँचाने जाती हूँ। वापस आकर नाश्ता बनाती हूँ। उसके बाद कभी–कभी खेतों में घास लेने जाती हूँ। दस बजे सिलाई सीखने चली जाती हूँ। वहीं से कॉलेज

चली जाती हूँ। शाम को तीन बजे आती हूँ। हाथ–मुंह धोकर खाना खाने के बाद केन्द्र में जाती हूँ। फिर शाम को चार से छः बजे तक केन्द्र में बच्चों के साथ रहती हूँ।

संगठन में जुड़ने से महिलाएं बहुत जागरूक हुई हैं। अब महिलाएं अपनी बातों को समाज के आगे रखती है। हर कार्य में बढ़–चढ़ कर भाग लेती हैं। गाँव में हर महीने संगठन की बैठक होती है। बैठक में सभी महिलाएं भाग लेती हैं। गाँव की सभी महिलाएं मिलजुल कर कार्य करती हैं। गाँव में जाख देवता का मंदिर है। सभी महिलाएं मिलजुल कर वहाँ साफ–सफाई करने के लिए जाती हैं। कभी–कभी गाँव के पूरे रास्तों की सफाई भी महिलाएं स्वयं करती हैं।

उत्तराखण्ड के अन्य गाँवों की तरह ग्वाड़ में भी जंगली जानवरों का आतंक छाया रहता है। मुख्यतया बंदर आ कर खेतों में परिपक्व हो रही फसलों को नष्ट कर देते हैं। बंदर घरों से सामान उठा ले जाते हैं। मनुष्यों पर हमला करते हैं। इस समस्या के निदान हेतु महिला संगठन ने बन्दरों को भगाने की बारी लगायी गयी है। इस के लिए रोज पाँच या छः महिलाएं मिलकर एक समूह के तौर पर बंदर भगाने के लिये जाती हैं।

खेती के कार्य को महिलाएं मिलजुल कर पूरा करती हैं। जब गाँव में कोई महिला बीमार होती है तो सभी मिलकर उसका खेती और जानवरों का कार्य पूरा कर देती हैं। महिलाएं मिलजुल कर अपनी एकता प्रदर्शित करते हुए किसी भी सामुहिक कार्य को पूरा करती हैं।

◆◆●◆◆

एक–दूसरे की मदद करते हैं

कलावती मेहता

मेरा गाँव मल्खा डुगर्चा हिमालय की वादियों में नामिक ग्लेश्यिर की तलहटी में बसा है। यह गाँव बागेश्वर जिले की कपकोट तहसील में स्थित है। गाँव में चारों ओर हरे–भरे पेड़ और खेत हैं। अच्छी सड़क और नेटवर्क की सुविधा है। सभी घरों में बिजली, पानी भी है। हमारे गाँव में मडुआ, मक्का, बाजरा की खेती करते हैं। ग्रामवासी अपने–अपने खेतों की रखवाली करते हैं। गाँव में आलू की खेती होती है। ग्रामवासी आलू को दुकानों में बेच कर घर का खर्चा चलाते हैं।

उत्तराखण्ड महिला परिषद् के तत्वाधान में मल्खा डुगर्चा गाँव में महिलाओं का संगठन बना है। गाँव की सभी महिलाएं एकजुट होकर काम करती हैं। गाँव में हर महीने महिलाओं की बैठक की जाती है। सभी महिलाएं पैसे जमा करके, जो सामान की जरूरत हो, लेकर आती हैं। हमारे गाँव में एक सामूहिक सामान रखने वाला भवन बनाया गया है। महिलाएं जो सामूहिक सामान लेती हैं उस को भवन में खुद रखती हैं। उस की देखभाल स्वयं करती हैं।

गाँव के मध्य में एक विद्यालय है। गाँव के सभी बच्चे पढ़ने के लिये जाते हैं। कुछ बच्चे स्कूल से घर वापस आने के बाद ट्यूशन पढ़ने के लिए जाते हैं। अन्य सभी बच्चे ग्राम शिक्षण केन्द्र में आते है। केन्द्र में अनेक गतिविधियाँ सीखते हैं। जब केन्द्र नहीं था तो बच्चे इधर–उधर खेलने चले जाते थे। केन्द्र खुलने के बाद वे शाम के समय एक व्यवस्थित दिनचर्या के अनुसार चलते हैं। केन्द्र में बच्चों के लिये अनेक प्रकार की खेल सामग्री रखी गयी है। सभी लोग मिल–जुल कर रहते हैं और एक–दूसरे की मदद के लिए हमेशा तत्पर रहते हैं।

मैं केन्द्र में शिक्षिका के रूप में चुनी गयी हूँ। केन्द्र से मुझे बहुत कुछ सीखने को मिला। मेरे दो बच्चे हैं। घर और खेतों का काम भी करना होता है। मैं घर का काम जल्दी से निपटा कर शाम को केन्द्र में जाती हूँ। बच्चों की प्रार्थना कराती हूँ। गतिविधियाँ कराने के बाद खेल और विभिन्न प्रकार के व्यायाम भी कराती हूँ। हम ने केन्द्र के चारों ओर फूल लगाये हैं। समय–समय पर फूलों की क्यारी की सफाई करते हैं। हर साल बाल–मेला भी कराते हैं। बाल–मेला के दिन बच्चे अनेक कार्यक्रम करते हैं। मल्खा डुगर्चा क्षेत्र में महिला सम्मेलन भी होते हैं।

◆◆●◆◆

पंचायती चुनावों में मतदाता जागरूकता

पायल बिष्ट

उत्तराखण्ड के गाँवों में आजकल, जून–जुलाई 2025, पंचायती चुनाव का माहौल बना है। सभी ग्राम पंचायतों से प्रत्याशी ग्राम प्रधान, क्षेत्र पंचायत व जिला पंचायत सदस्य के पदों के लिए आगे आये हैं। कई गाँवों में महिला संगठनों की सदस्याओं के द्वारा भी चुनाव लड़ा जा रहा है। इन उम्मीद्वारों को संगठन की महिलाओं का पूर्ण सहयोग मिल रहा है। चमाली जिले में दो चरणों में चुनाव होगा। पहला चरण चौबीस जुलाई 2025 व दूसरा चरण अट्ठाइस जुलाई 2025 को होगा। हमारे क्षेत्र में अट्ठाइस जुलाई को मतदान होना है।

पंचायती चुनावों के चलते नवज्योति महिला कल्याण संस्थान द्वारा सभी कार्यकर्त्ताओं, जो वर्तमान में संस्था के साथ जुड़े हैं तथा जिन्होंने पहले संस्था के साथ काम किया है, गोष्ठियाँ की गयीं। चर्चा हुई कि क्या अभी भी जातिवाद, क्षेत्रवाद तथा धन–बल के आधार पर मतदान हो रहा है? चर्चा में यह बात आयी कि ये सब हो रहा है। कुछ लोगों ने इसका विरोध किया पर अधिकतर लोग चुप रहते हैं। सभी कार्यकर्त्ताओं को महिला संगठनों के साथ गोष्ठी करने, जन जागरूकता फैलाने व योग्य प्रत्याशियों का चुनाव करने के लिये प्रेरित करने को कहा गया।

संस्था जिन गाँवों के संगठनों के साथ जुड़ी हैं–ग्वाड़, देवलधार, बैरागना, सिरोली, मण्डल, खल्ला, कोटेश्वर, बणद्वारा, दोगड़ी, काण्डई, बमियाला, टंगसा, कठूड़, बछेर व टेड़ा खनसाल, वहाँ पर मतदाता जागरूकता कार्यक्रम चलाया गया। इस जागरूकता अभियान में सभी ग्रामवासियों की भागीदारी रही। लोगों ने कहा कि वे न तो जाति के आधार पर वोट दे रहे हैं और न ही धन–बल के आधार पर। वे एक ऐसे व्यक्ति का चुनाव करेंगे जो सदैव हम लोगों के बीच में

रहे। महिलाओं ने कहा कि कुछ लोग गाँवों में प्रलोभन दे रहे हैं, इसका विरोध होना चाहिए।

सभी लोगों को जन जागरूकता के पर्चे बांटे गये जो उत्तराखण्ड महिला परिषद् अल्मोड़ा से मिले थे। महिलाओं ने पर्चे स्वयं पढ़े और सार्वजनिक स्थलों पर भी चिपकाये। संगठन की महिलाएं चुनावों के प्रति लोगों को जागरूक करती नजर आयीं।

संस्था द्वारा ग्रामीणों को ज्यादा से ज्यादा मतदान करने को कहा गया। हम पंचायत प्रतिनिधि के रूप में ऐसे प्रतियाशी को चुने जो गाँव में विकास करे, न कि केवल वोट मांगने आये। शराब, पैसा या अन्य चीजों का लालच न करें।

किसी भी तरह का मनभेद न करें क्योंकि चुनाव तो खत्म हो जायेंगे पर उसके बाद गाँव तथा महिला संगठन में एकता बनाना मुश्किल हो जाता है। झगड़े व गुटबाजी संगठनों को कमजोर कर देते है। अपने निजी स्वार्थों को छोड़ते हुए विकास की दिशा में सोच रखने वाले व्यक्ति का चयन करें। किसी भी प्रकार के प्रलोभन से बचते हुए लोकतंत्र की मजबूती के लिए कार्य करना हम सब का दायित्व है। इसी भाव के साथ गाँवों में जन जागरूकता का कार्य किया गया।

◆◆●◆◆

महिलाएं पंचायत प्रतिनिधि बनीं

विनोद कुमार

लगभग बीस वर्षों से मनिआगर क्षेत्र के ग्राम समुदायों के साथ काम करते हुए वर्तमान में दो ग्राम शिक्षण केन्द्र, एक कम्प्यूटर केन्द्र व महिला तथा किशोरी कौशल बढ़ाने के लिए दो सिलाई केन्द्र, एक ब्यूटीशियन केन्द्र का संचालन किया जा रहा है। संस्था के माध्यम से गाँव में महिला व किशोरी संगठन बने हैं। प्रत्येक माह गाँव में महिलाओं व किशोरियों की गोष्ठी की जाती हैं।

संस्थान का एक मुख्य कार्यक्रम गाँव में ग्राम शिक्षण केन्द्रों का संचालन करना है। बच्चों के व्यक्तित्व विकास के लिए यह एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम है। यहाँ पर बच्चों की विषयगत योग्यता बढ़ाई जाती है और नये–नये रचनात्मक कार्य किये जाते हैं। इस प्रयास से बच्चों की अभिव्यक्ति व मौलिक चिन्तन बढ़ता है।

समय–समय पर क्विज, चित्रांकन, निबंध प्रतियोगिता आदि गतिविधियाँ बच्चों की सोचने एवं अभिव्यक्ति की क्षमता बढ़ती है। प्रत्येक वर्ष अलग–अलग गाँव या विद्यालय में बाल–मेला का आयोजन किया जाता है। शिक्षिकाओं, बच्चों और संगठनों को कार्यक्रमों की जिम्मेदारी दी जाती है। मेले में विभिन्न प्रतियोगिताएं की जाती हैं। बच्चे वर्ष भर केन्द्र में की गयी गतिविधियों को प्रस्तुत करते हैं। इससे शिक्षण केन्द्र का मूल्यांकन भी होता है। अभिभावकों को भी अपने बच्चों के बारे में पता चलता है।

अभिभावक बताते हैं कि केन्द्र के माध्यम से बच्चों की विषयगत योग्यता बड़ी है। आज बच्चे विद्यालय के माध्यम से ब्लॉक व जिला स्तर पर अच्छा प्रदर्शन करते हैं। बच्चे बताते हैं कि केन्द्र के माध्यम से उनकी झिझक दूर हुई।

आज वे किसी भी मंच में अपनी बातों को अच्छी तरीके से रख सकते हैं। इससे लगता है कि केन्द्र के माध्यम से बच्चों का व्यक्तित्व विकास हुआ है।

संस्था द्वारा इस क्षेत्र में कम्प्यूटर साक्षरता कार्यक्रम संचालित किया जाता है। यह एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम है। बच्चे कम फीस में आसानी से कम्प्यूटर सीख रहे हैं। पिछले दस वर्षों से लगभग तीस गाँव के बच्चों, किशोरियों और महिलाओं ने कम्प्यूटर सीखा है। अनेक बच्चे किसी कम्पनी, मॉल, दूध डेयरी, विकासखण्ड, सी.एस.सी. सेंटर आदि में काम करके पैसा कमा रहे हैं। संस्था का एक बहुत ही महत्वपूर्ण कार्यक्रम मनिआगर क्षेत्र में सिलाई–बुनाई व ब्यूटीशियन केन्द्र का संचालन है। इसका मुख्य उद्देश्य कुछ कौशल विकसित करने के बाद आय को बढ़ाना है। यह कार्यक्रम पिछले नौ वर्षों से मनीआगर–जालबगाड़ी क्षेत्र में संचालित हो रहा है। पिछले नौ वर्षों में मनिआगर क्षेत्र के लगभग पचास गाँवों की पाँच सौ महिलाओं व किशोरियों ने सिलाई–बुनाई व ब्यूटीशियन का प्रशिक्षण लिया। इसमें से लगभग ड़ेढ़ सौ स्त्रियाँ आय अर्जित कर रही हैं। किसी ने अपनी दुकान खोल ली तो किसी ने घर में कपड़े सिलना आरम्भ किया है। कुछ महिलाएं जाड़ों के मौसम में स्वेटर बुनकर पैसा कमा रही हैं। कुछ अपने व परिवार के कपड़े सिलती हैं, स्वेटर बनाती हैं और पैसा बचा रही हैं।

इस कार्यक्रम से महिलाओं में काफी बदलाव आया है। जहाँ उनकी आय का जरिया बढ़ा वहीं पैसा कमाने से आत्मविश्वास भी बड़ा है। संस्था के माध्यम से गाँव में किशोरी व महिला संगठन बने हैं। गाँव में हर माह गोष्ठी की जाती है। गोष्ठी में सामाजिक व आर्थिक मुद्दों पर बातचीत की जाती है। गाँव की समस्याओं पर चर्चा करके उनके समाधान की योजना बनायी जाती है। इससे जहाँ महिलाओं की जानकारी बढ़ती है वहीं सामाजिक मुद्दों की समझ भी बनती है।

संगठन के माध्यम से सरकारी योजनाओं पर बातचीत की जाती है। गाँव में कुछ रचनात्मक कार्य किये जाते हैं। महिलाओं द्वारा समय–समय पर गाँव के रास्ते, पंचायत घर, मंदिर परिसर व शिक्षण केन्द्र की सफाई करना आदि कार्य संपादित होते हैं। पानी के स्रोतों की सफाई व पानी बढ़ाने हेतु चाल–खाल, वृक्षारोपण आदि कार्य होते हैं। महिलाओं द्वारा गलत कामों का विरोध किया जाता है।

ग्राम गोष्ठियों में, पंचायतों में महिलाओं की भूमिका पर बातचीत की जाती है। विस्तार से चर्चा होने के कारण महिलाओं की जानकारी बढ़ती है और समझ विकसित होती है। इसका असर हाल में हुए पंचायत चुनाव में स्पष्ट देखने को मिला। जो महिलाएं व किशोरियाँ किसी न किसी रूप से संस्था से जुड़ी थीं उनको पंचायत की समझ व ग्राम समुदाय के साथ काम करने का फायदा चुनाव में मिला। कई किशोरियाँ व महिलाएं ग्राम प्रधान, क्षेत्र पंचायत सदस्य, वार्ड सदस्य बनी हैं। पूर्व में संगठन की सदस्या जिला पंचायत सदस्य भी रह चुकी है। उनका मानना है कि संस्था के साथ जुड़कर बहुत कुछ सीखा। बैठकों में जाने से नयी–नयी जानकारियाँ मिली, सम्मेलनों में बोलना सीखा। ग्राम समुदाय के साथ काम करने का तरीका संस्था से जुड़कर सीखा। आत्मविश्वास बढ़ा और व्यक्तित्व का विकास हुआ। आज स्त्रियाँ पंचायती राज संबंधी अनेक काम आसानी से स्वयं कर लेती हैं। कहीं पर उन्हें मदद की जरूरत होती है। पंचायती राज की कार्यप्रणाणी को अब महिलाएं समझ रही हैं और आगे बढ़ रही हैं।

◆◆●◆◆

हमारे गाँव का जन्माष्टमी मेला

कंचन भण्डारी

हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी हमारे गाँव मालई, जिला चमोली, के मंदिर में जन्माष्टमी का पर्व बड़े धूमधाम से मनाया गया। इस वर्ष जन्माष्टमी का पर्व पन्द्रह अगस्त के दिन था।

जन्माष्टमी से पूर्व तेरह तारीख को मंदिर में श्रमदान द्वारा पत्थरों की एक दीवार को पूरा किया। मंदिर तथा रास्तों की साफ–सफाई की। मंदिर को अच्छी तरह सजाया गया। चौदह अगस्त को गाँव और सभी छोटे–बड़े रास्तों की सफाई की गयी। महिला संगठन व युवक मंगल दल के सभी सदस्यों ने जन्माष्टमी की सुबह मंदिर में जाकर पूजा की तथा जरूरत का सामान भी वहाँ पहुँचाया।

स्वतंत्रता दिवस मनाने के लिए सभी ग्रामवासी पंचायत घर में इकट्ठा हुए। प्रभात फेरी और नारों के साथ–साथ देशभक्ति के गीत गाये। हम सभी ने मिलकर भव्य रूप से स्वतंत्रता दिवस मनाया। ध्वजारोहरण के बाद कार्यक्रम का समापन हुआ। उस दिन गाँव में सभी का व्रत था। सभी ग्रामवासी मंदिर में गये। बच्चों व युवकों ने फलों को काटकर प्रसाद बनाने का काम किया। इस बीच महिलाओं ने कीर्तन–भजन कर के मंदिर में रौनक ला दी। मैंने भी महिलाओं के साथ बैठकर खूब भजन गाये। बड़ा ही आनन्द आया। मंदिर भक्तजनों से भर गया। सभी लोग मंदिर में आते–जाते रहे। भक्तजन जो भी फल अपनी श्रद्धा से लाये वही प्रसाद के रूप में बाँटा गया।

इस बार जन्माष्टमी के दिन मौसम बहुत खराब हो रहा था। लगातार बारिश हो रही थी तथापि श्री कृष्ण जी के जन्मोत्सव पर बारिश रूकी रही। हम सभी ने शाम के चार बजे तक भजन–कीर्तन किये। उसके बाद सभी लोग नन्दासैंण मेला देखने गये। यहाँ पर जन्माष्टमी का मेला लगता है। इस बार मेला ज्यादा बड़ा नहीं था। पहले दिन से बारिश ने बहुत खराब स्थिति की हुई थी। बाहर से आये हुए व्यापारियों की दुकानें कम ही लगी थीं पर वहाँ जलेबी की बहुत सी दुकानें थीं। सभी लोग जलेबी खरीद रहे थे। मैंने भी थोड़ा जलेबी खरीदी और घर वापस आ गयी। फिर मेरी ही तरह सभी अपने–अपने घर के काम जैसे खाना बनाना, श्री कृष्ण जी के भोग और प्रसाद बनाने की तैयारी करने लगे।

शाम को हमें भगवान नरसिंह स्वामी जी के मंदिर में भी जाना था। वहाँ पर श्री कृष्ण जी के जन्म का दृश्य रहता है। सभी अपने–अपने घर में भोजन तैयार करने लगे। भोजन बनाने के पश्चात् कुछ लोगों ने भोग लगाकर भोजन कर लिया। परंतु कुछ लोग रात को बारह बजे के बाद प्रसाद खाने वाले थे। वे घर में भोजन को ढ़ककर मंदिर में आ गये।

हम सभी ग्रामवासी रात को नौ बजे मंदिर में पहुँच गये। कीर्तन–भजन करते हुए सभी लोग श्री कृष्ण जी के रंग में रंग गये। दो–तीन भजन मैंने भी गाये। गाँव की अन्य सभी महिलाओं, युवावर्ग, पुरूषों और बुजुर्गों ने मिलकर मंदिर में भक्ति और श्रद्धा का समां बाँध दिया। कब साढ़े ग्यारह बज गया, पता ही नहीं चला। साढ़े ग्यारह बजे के बाद कीर्तन–भजन बंद हुए और गाँव के ही दादाजी ने कथा पढ़ना प्रारम्भ किया। ठीक बारह बजे से कुछ मिनट पहले कथा का समापन हुआ। ठीक बारह बजे श्री कृष्ण जी का जन्म हुआ। शंख व घंटियों की आवाज से सारा मंदिर गूँज उठा। सभी देवी–देवताओं की पूजा की गयी। उसके बाद भोग का प्रसाद (आटा, गुड़, तेल इत्यादि से बना हुआ) लेकर सभी ने व्रत खोला। सभी अपने–अपने घरों को वापस आये। इस प्रकार जन्माष्टमी का पर्व सभी ग्रामवासियों ने एकजुट हो कर मनाया।

◆◆●◆◆

ग्राम शिक्षण केन्द्र कमलेख

सुहानी बोहरा

मैं चम्पावत जिले के पाटी ब्लॉक के एक छोटे से गाँव कमलेख में रहती हूँ। जब मैं आठवीं कक्षा में पढ़ती थी, या शायद उससे भी पहले, कमलेख में ग्राम शिक्षण केन्द्र चलता था। शिक्षण केन्द्र का हिस्सा तो मैं तब नहीं हो पायी थी किन्तु बाल–मेले में अवश्य प्रतिभाग करती थी। बाल–मेलों में मैंने गाना गाया, सामान्य ज्ञान प्रतियोगिताओं में भी भाग लिया। शिक्षण केन्द्रों के बारे में पहले कोई अधिक जानकारी न होने के बावजूद मैं आज अपने गाँव के शिक्षण केन्द्र की शिक्षिका हूँ। ग्राम शिक्षण केन्द्र का कार्यभार मैंने एक मई 2024 से संभाला। मुझे तो यह भी ज्ञात नहीं था कि शिक्षण केन्द्र चलता कैसे है, चलाता कौन है। जब ग्राम शिक्षण केन्द्र चलाने लगी तब हमारी संस्था के प्रमुख तथा शिक्षिकाओं ने मदद की।

जब पहली बार केन्द्र में गयी तब मुझे एक अस्त–व्यस्त कमरा और बहुत से बच्चे मिले। वे मुझे बिलकुल पसन्द नहीं आये, भले ही मैं केन्द्र संचालन के लिये आयी थी। एक आत्मविश्वास के साथ मैं रोज केन्द्र में जाती और पढ़ाती। शुरू में समझ में नहीं आता था कि करना क्या है। बच्चे कैरम और रस्सीकूद पकड़ लेते और खेलते जाते। मेरी एक न सुनते। मैं बस उन्हें रोकती–टोकती रहती थी। उन के साथ हिन्दी और गणित की कुछ मामुली गतिविधियाँ ही कर पायी। बच्चे भले ही पढ़ाई कम करते थे लेकिन सबसे पहले उन्होंने ही मुझे शिक्षण केन्द्र में भावगीत करने के तरीके बताये। जो गतिविधियाँ भावगीत तथा खेल उन्हें आते थे, वे वही करते। घंटों तक एक ही खेल चलता। जब संस्था प्रमुख केन्द्र में आये तो उन्होंने बताया कि खेल तो थोड़ी ही देर का है। मैं नयी शिक्षिका थी उन्होंने मुझे डांटा नहीं। मैं सोच में पड़ गयी कि करूँ तो क्या?

दूसरे दिन जब केन्द्र में गयी तो बच्चों को गणित की गतिविधियों में बहुत व्यस्त रखा ताकि वे खेलने की बातें न करें। कुछ दिनों तक बात तो बनी लेकिन फिर वही पहले का माहौल बन गया। उसके बाद जून में उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान अल्मोड़ा में प्रशिक्षण के लिये गयी। वहाँ जा कर पता चला कि असल में केन्द्र चलता कैसे है। वहाँ पर सभी शिक्षिकाओं ने अपने–अपने केन्द्रों के बारे में बताया। मेरे मन में हजार सवाल उठ रहे थे। मैं सिर्फ एक ही चीज सोच रही थी कि इनके केन्द्रों में बच्चे इतने अच्छे हैं, इनका केन्द्र अच्छा चलता है। इनके मुकाबले मेरा केन्द्र तो एक प्रतिशत भी अच्छा नहीं है। आश्चर्य तो तब हुआ जब शिक्षिकाओं ने कहा कि केन्द्र में बच्चे खुद

कहानियाँ पढ़ते हैं। मुझे केन्द्र चलाते हुए एक महीना हो गया था और मैंने खुद केन्द्र में मुश्किल से कोई कहानी पढ़कर सुनायी थी।

उनकी बातों को सुनकर मुझे लगा कि मैं बहुत पीछे हूँ। तब प्रशिक्षण में मेरा मन लग गया। मैंने बहुत सी नयी चीजें सीखी। एक नये आत्मविश्वास के साथ केन्द्र चलाने के लिए स्वयं को प्रेरित किया। वापस जब गाँव में आयी तो केन्द्र में गयी। सबसे पहले बच्चों की इधर–उधर पड़ी हुई चप्पलों को खुद सही किया। उन से कहा कि आज से वे सब लाइन से चप्पलें लगायेंगे। धीरे–धीरे उनकी आदतों में परिवर्तन लाने के लिये मैंने अनेक प्रयास किये। फिर मैंने बच्चों के मनोरंजन के लिए हर रोज मात्र बीस मिनट का डांस प्रोग्राम रख दिया। जो कि एक बहुत अच्छा तरीका साबित हुआ। बच्चे मेरे द्वारा कही गयी हर एक बात को मानने लगे।

धीरे–धीरे मैंने उन्हें पढ़ने के लिए प्रेरित किया। बच्चों ने थोड़ा पढ़ना शुरू किया। जब केन्द्र अच्छा चलने लगा तब संस्था प्रमुख ने तारीफ की। बच्चों के माता–पिता ने मुझे उनके बारे में बताया। वे मुझ से कहते कि तूने बच्चों पर जादू कर दिया है। अब मैं खुश हो गयी। केन्द्र भी अच्छा चलने लगा। सब ठीक था लेकिन फिर मेरी खुशियों पर ग्रहण लग गया। बच्चे कुछ गलती करते तो मैं उन्हें डांटती लेकिन अब बड़े बच्चे मुझे ही डांटने लगे। बहुत सोच–विचार के बाद मैंने बच्चों को डांटना छोड़ दिया। अब मैं शिक्षिका कम, दोस्त की भाँति रहने लगी। धीरे–धीरे सभी बच्चों में परिवर्तन आया। वे केन्द्र में आते, अपनी चप्पलें लाइन से लगाते, ठीक से बैठते और केन्द्र ढंग से चलने लगा।

दूसरी बार जब अल्मोड़ा प्रशिक्षण के लिये गयी तब मुझे खुद पर थोड़ा कम गुस्सा आया। इस बीच मैंने अपने केन्द्र की सजावट पहले से काफी बेहतर कर ली थी। बच्चों में परिवर्तन आया था। इस बार अल्मोड़ा में पढ़ाने का बहुत अच्छा तरीका सीखा। पहले कोई गतिविधि कराती तो बस किताबें पढ़ कर बता देती लेकिन इस बार गतिविधियों को खेल के तरीके से करना सीखा। आज केन्द्र की स्थिति ऐसी है कि बच्चों की वजह से यदि मैं संस्था प्रमुख से डांट पाती हूँ तो बच्चे उन के दोबारा केन्द्र में आने तक उस गलती को सुधार चुके होते हैं।

पहले बच्चे मुझे पसन्द नहीं थे लेकिन अब उन से बहुत लगाव हो गया है। अब बच्चे केन्द्र में हर एक गतिविधि, कहानियों को पढ़ना, भावगीत आदि बहुत अच्छे से करते हैं। अभी भी मैं कहूँगी कि मेरा केन्द्र बहुत सी अन्य शिक्षिकाओं के मुकाबले अच्छा नहीं चलता, लेकिन अब पहले से काफी अच्छा चलता है। अब मेरी यही कोशिश रहती है कि मैं अपने केन्द्र को बेहतर से बेहतर बना सकूँ।

सभी महिलाएं संगठन में जुड़ी

दीपा आर्या

मेरे गाँव का नाम सुरना है। यह गाँव चारों ओर ऊँचे पहाड़ों से घिरा हुआ है। मेरे गाँव में खूब पानी उपलब्ध है। हमारे घर के नीचे से ही एक बड़ी नदी गुजरती है। यह नदी भटकोट से निकलती है और गगास नदी में मिल जाती है।

आज से पन्द्रह साल पहले मेरे गाँव में ऐसी एकता नहीं थी जैसी आज है। लोग अपने काम तक ही सीमित रहते थे। महिलाएं अपने घर–खेतों के काम के अलावा किसी भी क्षेत्र में आगे नहीं आती थीं। उन्हें बहुत झिझक होती थी। मन में डर भी बना रहता था।

जब हमारे गाँव की महिलाएं उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान अल्मोड़ा में गये तो वहाँ पर रमा दीदी व अनुराधा दीदी ने गाँव की एकता के बारे में बताया। कहा कि गाँव के विकास के लिए एकता होनी जरूरी है। अल्मोड़ा में उत्तराखण्ड के अन्य जिलों से महिलाएं आयी हुई थीं। उन्होंने बताया कि उनके संगठनों में बहुत एकता है। तब हमारे गाँव की महिलाओं ने सोच लिया कि हम सब लोग मिलजुलकर रहेंगे।

जब महिलाएं गोष्ठी में भाग ले कर वापस आयीं तो उन्होंने गाँव में अल्मोड़ा में हुई चर्चा पर बातचीत की। कुछ समय बाद उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान अल्मोड़ा से वे लोग हमारे गाँव में आये और सभी महिलाओं से संगठन मजबूत करने के विषय में बात की। ग्रामवासी बहुत खुश हो गये। हमें आगे बढ़ने का मौका मिला। सभी महिलाएं संगठन में जुड़ी। अब संगठन के जरिये सभी लोग मिलजुलकर सारे कार्य करते हैं।

गाँव में हर महीने सात तारीख को महिलाओं की गोष्ठी होती है। हर एक गोष्ठी में लगभग पचास महिलाएं आती हैं। वे संगठन में पैसे जमा करती हैं। आपस में किसी को कुछ तकलीफ हो तो उस पर चर्चा करती हैं। समस्या का हल निकालती हैं। संगठन की महिलाओं व गाँव में लोगों ने मिलकर रास्ते साफ किये, गधेरों की झाड़ियाँ काटी। इससे हमारा गाँव साफ–सुथरा रहता है। कहीं शादी–ब्याह हो तो गाँव के सभी लोग मिलजुलकर सारा काम करते है। जब हमारे ग्राम शिक्षण केन्द्र का दरवाजा टूटा तो हमें केन्द्र का सामान रखने में बहुत दिक्कत हो रही थी। ग्रामवासियों ने पैसे जमा किये और नया दरवाजा लगाया। महिलाएं बारी–बारी से बन्दरों को भगाने जाती हैं। जो अपने बारी में

नहीं जाता, उससे फाइन लिया जाता है। जब कभी हमारे जंगलों में आग लग जाती है तो सभी ग्रामवासी आग बुझाने के लिए जाते है।

गाँव में एकता होने से प्रेम और सहयोग की भावना बढ़ती है। सब लोग एक साथ मिलकर काम करते हैं तो इससे गाँव की आर्थिक स्थिति में भी सुधार होता है। गाँव की एकता से सांस्कृतिक परम्पराओं और रीति–रीवाजों को बचाये रखने में मदद मिलती है। गाँव में एकता होने से गाँव में हो रही समस्याओं का समाधान करने में मदद मिलती है। इस कारण पहाड़ों में महिला संगठन बनाने एवं मजबूत रखने के लिये संस्था का बहुमूल्य योगदान रहा है।

◆◆●◆◆

पानी

निकिता सोरारी

मेरा गाँव चम्पावत जिले के पाटी ब्लॉक में स्थित है। इस का नाम गूम है। मेरा गाँव प्राकृतिक सुन्दरता में श्रेष्ठ है। इसी के साथ ईष्ट देवताओं के मंदिरों से घिरा हुआ है। लोगों की मान्यता है कि देवता चारों ओर से ग्रामवासियों की रक्षा करते हैं। मेरे गाँव में दस नौले है। ''हर घर नल'' योजना के तहत आजकल सभी के घरों में नल लगे हुए हैं। इस कारण लोग नौले का इस्तेमाल कम ही करते हैं।

पहले के समय में ग्रामवासी बहुत दूर–दूर तक खेतों में जाकर फसलें उगाते थे। पूरे साल भर के खाने के लिए अनाज का उत्पादन होता था। आज पलायन और जंगली जानवरों के कारण खेती करना बन्द सा हो गया है। लोग अपने घरों के आस–पास ही खेती करते हैं। दूर बिखरे हुए खेतों में जंगली सुअर और बंदर आकर फसलों को खराब कर देते हैं। लोगों के गाँव से शहर की ओर पलायन करने से भी खेती कम हुई है। गाँव में ज्यादातर वृद्ध लोग ही रहते हैं।

पहले हमारे गाँव में सड़क की सुविधा नहीं थी। लोग चालीस–पचास किलो वजन उठा कर मीलों तक पैदल चल कर आते थे। गाँव की एकता से सभी महिलाओं और पुरूषों ने मिलकर बहुत सी समस्याओं का सामना किया और आखिर में गाँव में सड़क की सुविधा लाये।

विगत वर्षों में नौलों की स्थिति भी खराब थी। अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान से रमा दीदी और अनुराधा दीदी आये। उन्होंने सभी महिलाओं को एकत्र कर के उनके सामने नौले की सफाई की बात रखी। समझाया कि नौलों में साफ–सफाई रखना कितना जरूरी है। फलस्वरूप महिलाओं ने नौले की सफाई का काम किया। अब नौलों की स्थिति में काफी सुधार है। मेरे गाँव के नवयुवक बहुत अच्छे हैं। वे सब मिल कर हर मंदिर व सार्वजनिक स्थलों की सफाई में अपना पूर्ण सहयोग देते हैं। अपनी परम्पराओं का सम्मान व पारंपरिक नियमों का पालन करते हैं।

◆◆●◆◆

केन्द्र सबके सहयोग से चलता है

लक्ष्मी नेगी

मेरा गाँव, जाख, चमोली जिले के कर्णप्रयाग विकासखण्ड में स्थित है। मैंने ग्राम शिक्षण केन्द्र एक अप्रैल 2025 से चलाना शुरू किया। मैं शाम चार बजे केन्द्र खोलती हूँ। ग्राम शिक्षण केन्द्र सिर्फ बच्चों के लिए ही नही बल्कि गाँव की सभी किशोरियों और महिलाओं के लिए भी है। इस केन्द्र के साथ मेरे आस–पास के गाँवों में बहुत से महिला संगठन काम कर रहे हैं। यहाँ सिखाने और सीखने को बहुत कुछ है।

केन्द्र में बहुत से बच्चे आते हैं। शुरूआत में उन सभी को संभालना बहुत मुश्किल हो जाता था। अब दो–तीन महीने केन्द्र चलाकर, थोड़ा पुचकार–फटकार लगाकर बच्चे मेरी बात मान रहे हैं। ग्राम शिक्षण केन्द्र में हम मासिक चार्ट के अनुसार कार्य करते हैं। मैं सबसे पहले बच्चों को प्रार्थना करवाती हूँ। उसके बाद पंद्रह मिनट का मौन पाठन किया जाता है। मौन पाठन के बाद गतिविधियों के अनुसार काम करवाती हूँ। ग्राम शिक्षण केन्द्र ने ग्रामवासियों के मन में एक अलग छवि बनाई है। इस कारण से केन्द्र की तरफ सभी का आकर्षण रहता है।

ग्राम शिक्षण केन्द्र से मेरा जुड़ाव बचपन से ही रहा। जब मैं दस–बारह साल की थी तभी विद्यालय से वापस आने के बाद रोज शाम को चार बजे केन्द्र में जाती थी। उस समय केन्द्र की शिक्षिका ज्योति दीदी थी। केन्द्र में दीदी जो भी पढ़ाती मैं उसे अच्छी तरह समझने की कोशिश करती थी। मुझे कहानियाँ पढ़ना बहुत अच्छा लगता था। मैंने बहुत सारे बाल–मेलों में प्रतिभाग किया और प्रथम स्थान भी प्राप्त किया।

ज्योति दीदी की शादी के बाद केन्द्र की संचालिका रचना दीदी बनी। कुछ वर्षों के बाद आगे की कक्षा में चले जाने के कारण मेरा केन्द्र में जाना छूट गया, तथापि रचना दीदी को कभी भी मेरी सहायता की जरूरत होती तो मैं जरूर वहाँ जाती। रचना दीदी ने भी बहुत अच्छी तरह से केन्द्र का संचालन किया।

ग्राम शिक्षण केन्द्र के लिए मेरा चयन एक परीक्षा ले कर किया गया। इस परीक्षा में छः लड़कियों ने प्रतिभाग किया। इसमें सामान्य ज्ञान, कहानी, व्याकरण तथा कुछ गणित–संबंधी जानकारियों के बारे में पूछा गया था। दो दिनों के बाद परिणाम घोषित हुआ। इसमें मेरा चयन हुआ।

केन्द्र चलाने से पहले मैं पाँच दिन के प्रशिक्षण के लिए उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान अल्मोड़ा में गयी। वहाँ जाकर मैंने केन्द्र के बारे में बहुत सी जानकारियाँ प्राप्त की। वहाँ मेरे लिए सब कुछ नया था पर मेरे साथ रचना दीदी थी। इस कारण मुझे कोई ज्यादा परेशानी नहीं हुई। मैंने जैसा प्रशिक्षण में सीखा और जितना मुझे आता है, वैसे ही शिक्षण शुरू किया।

ग्राम शिक्षण केन्द्र के बारे में मुझे एक बात बहुत अच्छी लगी कि वहाँ एकजुट होकर काम किया जाता है। सभी का एक बराबर सहयोग रहने से केन्द्र में एक अनोखी चमक आ जाती है। ग्राम शिक्षण केन्द्र में इस ढंग से शिक्षा दी जाती है कि बच्चों को बहुत जल्दी समझ में आ जाता है। केन्द्र में अनेक गतिविधियाँ की जाती हैं। अलग–अलग प्रकार के भावगीत सिखाये जाते हैं। इसी के साथ–साथ बच्चे अनेक प्रकार के रचनात्मक कार्य, चित्रांकन आदि करते हैं। इन सभी कार्यों में बच्चे बहुत रूचि लेते हैं। यह सब देखकर मुझे अच्छा लगता है। बच्चों के साथ रहकर मेरा उनके साथ एक विशेष लगाव हो गया है।

जब मैंने केन्द्र चलाना आरंभ किया तो एक–दो दिन बहुत ही कम बच्चे आये। कुछ बच्चे आगे की कक्षाओं में जा चुके थे। मैंने सभी बच्चों को नियमित रूप से आने को कहा। धीरे–धीरे बच्चों की संख्या बढ़ने लगी। अब प्राथमिक कक्षाओं में पढ़ रहे सभी बच्चे शाम को केन्द्र में आते हैं। कक्षा छः–सात में पढ़ रहे कुछ बच्चे भी आ जाते हैं। अब मुझे भी बच्चों के साथ रहना बहुत अच्छा लगता है। बच्चे खुशी से केन्द्र में आते हैं, खेलते हैं और विभिन्न प्रकार की गतिविधियाँ करते हैं। मेरी भी हमेशा यही कोशिश रहेगी कि केन्द्र का संचालन अच्छी तरह से कर सकूँ।

◆◆●◆◆

महिला संगठन की गोष्ठियाँ

पलक पचौरी

महिला व किशोरी गोष्ठियों में बातचीत किसी योजना या संस्था में कार्य से संबंधित हो, यह जरूरी नहीं। बातचीत गाँव के विकास से संबंधित होती है। देखा जाय तो गाँवों में विकास के लिये महिलाओं की अहम भूमिका रहती है। ग्राम गोष्ठियों में वे विभिन्न बिन्दुओं पर चर्चा कर के आपस में सलाह करती हैं, समस्याओं का हल निकालती हैं।

हमारी संस्था से जुड़े हुए प्रत्येक गाँव में महिला गोष्ठी के लिए एक निश्चित दिन या तिथि को चुना गया है। माह में एक बार गोष्ठी की जाती है। कई बार तो किसी विषय या कार्य के लिए एक ही महीने में दो बार भी बैठकें हो जाती हैं। हमारे गाँव में महिला गोष्ठी हर महीने के प्रथम सोमवार को होती है। सभी महिलाएं एक निश्चित जगह पर एकत्रित हो जाती हैं और बातचीत प्रारम्भ करती हैं। वे गाँव से संबंधित बातों को गोष्ठी में रखती है और आपस में चर्चा करती हैं। सभी महिलाएं एक ही गाँव की होती हैं। प्रत्येक महिला स्पष्ट रूप से अपनी बात को कहती है। इस गोष्ठी से यह भी पता चलता है कि अमुक महिला का स्वभाव किस तरह का है।

गोष्ठी में महिलाओं द्वारा गाँव की एकता पर चर्चा की जाती है। गाँव में कोई भी कार्य हो तो सभी लोग पूरा सहयोग देते हैं। इस वर्ष मैं भी विभिन्न गाँवों में आयोजित बैठकों में शामिल हुई। मैंने महिलाओं का अपने गाँव के प्रति प्रेम और उन की जागरूकता को देखा। महिलाएं गोष्ठी की शुरूआत जन–चेतना जगाने वाले गीतों से करती हैं। इन गीतों में समाज में बदलाव लाने का संदेश होता है। कुछ गाँवों में शिक्षिकाओं द्वारा केन्द्र चलाये जा रहे हैं।

ग्राम बैठकों में केन्द्रों के बारे में भी चर्चा हुई। शिक्षिकाएं भी ग्राम बैठकों में आती हैं। गोष्ठियों में बच्चों की शिक्षा के बारे में बात की गयी। महिलाओं ने सुझाव भी दिये। प्रत्येक गाँव में महिलाओं ने अपनी समस्याओं को बताया। इन समस्याओं के समाधान को भी साझा किया।

गाँवों में देखी गयी सर्वसामान्य समस्या जंगली जानवरों के द्वारा मनुष्यों और फसलों को हानि और पानी की कमी रही। कुछ गाँवों में पानी की समस्या नहीं देखी गयी। वहाँ पर महिलाओं ने उसकी वजह व उनके द्वारा किये गये उपायों को बताया। जैसे–महिलाओं द्वारा निर्धारित तिथि को पानी के स्रोतों की सफाई की जाती है। ग्राम वन में चौड़ी पत्ती के पेड़ों को लगाने से पानी के संरक्षण में मदद मिली है आदि।

ग्राम बैठकों में एक विशेष तरह की शक्ति देखने को मिलती है। महिलाओं ने गोष्ठी के माध्यम से विकास की गति को तेज करने व लोगों को जोड़े रखने में अहम् भूमिका निभाई है। ग्राम बैठकों में शामिल हो कर महिलाओं, किशोरियों और गाँवों में आ रहे परिवर्तनों को साफ देखा जा सकता है। अंत में मैं यही कहुँगी कि– ''महिलाओं की एकता का प्रदर्शन गाँवों के विकास में हुआ है।''

◆◆●◆◆

शिक्षा सर्वोपरि है

अनुष्का बर्त्वाल

मैं नव ज्योति महिला कल्याण संस्थान गोपेश्वर के माध्यम से ग्राम दोगड़ी–काण्डई में ग्राम शिक्षण केन्द्र चलाती हूँ। मैंने एक सितम्बर, 2024 से केन्द्र चलाना शुरू किया था। मुझसे पहले श्रीमती पूनम रावत ने ग्राम शिक्षण केन्द्र को चलाया था। उन्होंने ग्राम शिक्षण केन्द्र को पन्द्रह अगस्त 2024 को छोड़ दिया था। पन्द्रह अगस्त 2024 को ही महिलाओं द्वारा औपचारिक रूप से मेरा चयन किया गया।

ग्राम शिक्षण केन्द्र सिर्फ बच्चों के लिए ही नहीं बल्कि किशोरियों तथा महिलाओं के साथ भी काम करता है। इस शिक्षण केन्द्र के द्वारा हमारे आस–पास के सभी गाँवों में महिलाओं के अनेक संगठन बने हैं। यहाँ हर एक काम एकजुट होकर किया जाता है। सब के सहयोग से केन्द्र चलता है। ग्रामवासियों खास कर महिला संगठन के पूर्ण सहयोग से शिक्षण केन्द्र चल पाता है। ग्राम शिक्षण केन्द्र में बच्चों को इस ढंग से शिक्षा दी जाती है कि उन्हें बहुत जल्दी समझ में आ जाता है। इसी के साथ–साथ हम केन्द्र में अनेक रचनात्मक कार्य करते हैं। मुझे बच्चों का उत्साह देखकर बहुत अच्छा लगता है।

मैं केन्द्र को शाम चार बजे खोलती हूँ। हम मासिक चार्ट के अनुसार कार्य करते हैं। दो गाँवों के बच्चे यहाँ आते हैं। जब मैं दस–ग्यारह साल की थी तब हमेशा शाम चार बजे ग्राम शिक्षण केन्द्र में जाती थी। उस समय केन्द्र की शिक्षिका सुमन दीदी थी। उसके बाद सुमन दीदी ने अपनी पढ़ाई की तैयारी के कारण ग्राम शिक्षण केन्द्र छोड़ दिया। ग्राम शिक्षण केन्द्र की नयी संचालिका का चयन हुआ और श्रीमती पूनम रावत केन्द्र चलाने लगी। मैं भी हमेशा ग्राम शिक्षण केन्द्र में जाती थी। वहाँ अखबार तथा अलग–अलग प्रकार की किताबें पढ़ना अच्छा लगता था। कभी–कभी मैं शिक्षिका दीदी के साथ छोटे बच्चों को संभालने में मदद करती थी।

जब मैंने केन्द्र चलाना आरम्भ किया तो बच्चों की संख्या कम थी। इस कारण गाँव में सभी महिलाओं की गोष्ठी करवायी। उसके बाद धीरे–धीरे बच्चों की संख्या बढ़ने लगी। अब मुझे भी बच्चों के साथ रहना बहुत अच्छा लगता है। बच्चे भी खुशी–खुशी से केन्द्र में आते हैं।

◆◆●◆◆

माँ ऊफराई, मोडवी देवी की यात्रा

कमलेश आर्या

उत्तराखण्ड में नंदा राजजात यात्रा से पहले कई देवी–यात्राएं होती है। इसमें नंदाष्टमी, होमकुण्ड और भगवती मंदिर की यात्राएं नंदा देवी को समर्पित रही हैं। आमतौर पर बारह वर्षों में एक बार होने वाली राजजात यात्रा शुरू होने से पहले मोडवी आयोजित की जाती है। इन यात्राओं का उद्देश्य देवी नंदा से प्रश्न कर के उस का समाधान पाना, उनका आशीर्वाद तथा मार्गदर्शन प्राप्त करना है।

मोडवी देवी यात्राओं में नंदाष्टमी का पर्व मुख्य है। इसमें विभिन्न गाँवों से देवियों की डोली (पालकी) को एक विशेष स्थान पर लाया जाता है।

होमकुण्ड यात्रा नंदा देवी राजजात के अंतिम पड़ाव होमकुण्ड तक जाती है। इसमें देवी की डोली को कैलाश पर्वत की ओर विदा किया जाता है। भगवती मंदिर की यात्रा देवी नंदा के मंदिर तक जाती है। यहाँ भक्त देवी की पूजा अर्चना करते हैं और आशीर्वाद मांगते हैं।

उत्तराखण्ड के लोगों के लिये मोडवी यात्रा धार्मिक और सांस्कृतिक महत्त्व रखती है। नंदा देवी के प्रति गहरी आस्था और भक्ति को दिखाने वाली यह यात्रा पूरे पहाड़ी समुदाय को एक साथ लाती है। पारंपरिक रीति–रिवाजों को जीवित रखती है।

नंदा राजजात से कई महीने पहले मोडवी यात्रा की तैयारी शुरू हो जाती है। भक्त देवी की डोली, छंतोली और अन्य पूजा की सामग्री तैयार करते हैं। स्थानीय लोग इस यात्रा में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं और देवी की पूजा अर्चना करते हैं। यात्रा के दौरान भक्त देवी के भजन गाते हैं और निरंतर स्तुति करते चलते हैं।

मोडवी यात्रा एक धार्मिक और सांस्कृतिक आयोजन है। यात्रा में मायके से दी जाने वाली प्रथम भेंट (कल्यों) बैनोली गाँव से आरम्भ की जाती है। मोडवी देवी के मायके से सभी लोग अपनी ईष्ट देवी को भेंट स्वरूप कल्यों में ककड़ियां, मक्का, चावल से बनाया गया प्रसाद (आरसा) आदि देते हैं। यात्रा के दौरान इस प्रसाद को श्रद्धापूर्वक ले जाया जाता है।

यात्रा में सभी श्रद्धालु नंगे पैर चलते हैं, कोई भी भक्त चप्पल/जूता नहीं पहनता। इस यात्रा में समस्त ग्रामवासी बढ़–चढ़कर भाग लेते हैं। माँ ऊफराई की डोली उनके मायके बैनोली गाँव से ग्रामवासियों द्वारा आधे रास्ते तक लायी जाती है। इसके उपरान्त आगे की डोली ससुराल पक्ष नौटी के द्वारा माँ ऊफराई देवी के मंदिर तक लायी जाती है। यात्रा का मार्ग आठ किलोमीटर का है। मायके से भेंट मिलने के उपरांत डोली के सुनिश्चित स्थान उफराई ठांका पर पहुँचने के बाद भक्तों को प्रसाद दिया जाता है। श्रद्धालु बहुत प्रेम व श्रद्धापूर्वक यह प्रसाद ग्रहण करते हैं।

◆◆●◆◆

महिला संगठन का योगदान

माया बोरा

इस वर्ष बाल–मेला एवं महिला सम्मेलन का आयोजन मेरे गाँव खकोली, जिला अल्मोड़ा, में किया गया। यह कार्यक्रम मेरे गाँव में पहली बार हुआ। पहला आयोजन होने के कारण मेरे मन में खुशी तो थी लेकिन चिंता भी थी कि कार्यक्रम सफलतापूर्वक संपन्न होगा अथवा नहीं। आयोजन की तैयारी के साथ–साथ मुझे अपने केन्द्र के बच्चों के कार्यक्रमों की तैयारी भी करानी थी। इस कारण मुझ पर थोड़ा दबाव था। मैंने अपने आत्मविश्वास को बढ़ाते हुए, गाँव की सभी महिलाओं से बाल–मेला व महिला सम्मेलन कराने पर सहमति ली। सभी ने हर–संभव मदद का वादा किया।

कार्यक्रम तय करने के लिये हमने गाँव में गोष्ठी रखी। इस गोष्ठी में सभी महिलाएं उपस्थित हुई। महिलाओं ने बड़े उत्साह के साथ बाल–मेला व सम्मेलन पर चर्चा की। आयोजन का स्थान तय किया। सभी महिलाओं ने बाल–मेला एवं महिला सम्मेलन के लिये प्राथमिक विद्यालय के प्रांगण को चुना। आयोजन हेतु जो मूलभूत सुविधाएं चाहिए, वे सभी विद्यालय प्रांगण में मौजूद थीं। जैसे–खुली जगह, बिजली, पानी आदि की अच्छी व्यवस्था थी।

उसके बाद मैं एक दिन विद्यालय में गयी। वहाँ अध्यापिका जी से मुलाकात की। उन्हें आने का उद्देश्य बताया। मेरे आने का प्रयोजन जान कर अध्यापिका जी खुश हो गयीं। हमें पूर्ण सहयोग देने का आश्वासन दिया। उसके बाद मैंने अपनी गाँव की महिलाओं के साथ मिल कर इस कार्यक्रम को सफल बनाने के लिये चर्चा की। सभी का सहयोग व रूझान सकारात्मक था। सभी ने पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया।

बाल–मेले के दिन संगठन की सदस्याएं अपने–अपने घरों से दूध व ईंधन के लिए लकड़ियाँ ले कर आयोजन स्थल तक आयीं। वहाँ पर पहुँचते ही उन्होंने बच्चों व अतिथियों के लिये जलपान की तैयारियाँ शुरू कर दीं। कुछ समय बाद अन्य केन्द्रों की शिक्षिकाएं अपने–अपने केन्द्रों के बच्चों को ले कर आयोजन स्थल पर पहुँच गयी। साथ ही, हमारे गाँव व आस–पास के अन्य गाँवों की सभी महिलाएं आयोजन स्थल पर पहुँच गयीं। इसी बीच उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान अल्मोड़ा से अनुराधा दीदी, रमा दीदी, कैलाश भाई, कमल भाई आदि हम लोगों के बीच पहुँच गये। कार्यक्रम को आगे बढ़ाते

हुए मेरे केन्द्र के बच्चों ने स्वागत गीत के साथ सभी अतिथियों का स्वागत किया तथा दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रमों की शुरूआत की।

बच्चों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये। नाटक, चित्रांकन, भाषा लेखन, खेल प्रतियोगिताओं में भाग लिया। बीच–बीच में महिलाओं ने ओजस्वी भाषण के रूप में अपने विचार रखे। बच्चों से सामान्य ज्ञान के प्रश्न–उत्तर पूछे गये। पूछे गये प्रश्न अन्य बच्चों व महिलाओं के लिए भी थे। प्रश्नों के उत्तर देने के लिए महिलाएं भी काफी उत्सुक थीं। सही जवाब देने पर प्रोत्साहन के रूप में इनाम दिया गया। कैरम प्रतियोगिता भी करायी गयी।

अब दूर गाँव से आयी हुई महिलाओं के जाने का समय होने लगा। समय के अभाव के कारण कार्यक्रम को समापन की ओर ले जाया गया। बच्चों द्वारा किये गये कार्यक्रमों एवं गतिविधियों पर बच्चों को क्रमवारी–प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त करने पर पुरस्कार दिया गया। अन्य सभी बच्चों को भी प्रोत्साहन पुरस्कार दिया गया। पुरस्कार पा कर बच्चे काफी खुश थे।

इसके पश्चात् सभी बच्चों और महिलाओं को संगठन की सदस्याओं द्वारा बनाया गया खाना–हलवा, चने और चाय प्रेमपूर्वक खिलाया गया। हमारे गाँव की महिलाओं के व्यवहार, सहयोग व एकता को देख कर दूसरे गाँव से आयी हुई महिलाएं बहुत प्रभावित हुई। ग्रामवासियों के सहयोग व मेहनत से बाल–मेला और महिला सम्मेलन का सफलतापूर्वक समापन हुआ।

◆◆●◆◆

स्याल्दे बिखौती का मेला

सरिता रावत

स्याल्दे बिखौती एक प्रसिद्ध मेला है जो द्वाराहाट, जिला अल्मोड़ा, में आयोजित किया जाता है। मेरे गाँव मटेला से लगभग तेरह–चौदह किमी. की दूरी पर द्वाराहाट स्थित है। यह मेला हर साल बैशाख के महीने में होता है। इसका इतिहास चौदहवीं शताब्दी से जुड़ा माना जाता है। स्याल्दे बिखौती में ओड़ा भेटना एक महत्वपूर्ण अनुष्ठान है। इसमें ग्रामीण अपने दलों के निशान लेकर एक विशेष पत्थर के पास पहुँचते हैं और जोश के साथ इस अनुष्ठान को संपन्न करते हैं।

स्याल्दे बिखौती मेला दो मंदिरों, शिव के मंदिर विभांडेश्वर और शक्ति के मंदिर शीतला देवी, के प्रांगण में संयुक्त रूप से आयोजित किया जाता है। पहले यह मेला इतना विशाल था कि अपने दलों के चिह्न लिए हुए ग्रामीण ओड़ा भेटनें के लिए घंटों इंतजार करते थे।

एक पौराणिक कथा के अनुसार शीतला देवी के मंदिर से लौटने के दौरान दो गाँवों के दलों में संघर्ष हो गया। पराजित दल के सरदार का सिर काटकर जिस स्थान पर गाड़ा गया, वहाँ पर एक पत्थर रख दिया गया। इसे ओड़ा कहा जाता है। तब से ओड़ा भेंटने की परंपरा चली आ रही है। इस पत्थर पर चोट मारकर ही मेले में आगे बढ़ा जा सकता है। कहते हैं कि यह पत्थर वैसे कभी नहीं दिखाई देता। माना जाता है कि जब मेला शुरू होता है तो पत्थर अपने–आप बाहर की ओर आने लगता है।

आज भी यह मेला पुराने रंग और उल्लास से भरपूर आयोजन के रूप में मनाया जाता है। संगीत और नृत्य का उत्सव होता है, झोड़ा गाया जाता है। महिलाएं व पुरूष झोड़े में शामिल होते हैं। दूर–दूर से लोग मेले को देखने के लिये आते हैं। इसमें भाग लेते हैं। बहुत से कार्यक्रम जैसे तलवारबाजी, कलश–यात्रा आदि आयोजित किये जाते हैं। गायक कलाकार अपने गीतों से एक अनोखा समां बाँध देते हैं।

मेले में अनेक प्रकार की दुकानें सजायी जाती हैं। यह बाजार एक हफ्ते तक लगी रहती है। दुकानों में कपड़े, बर्तन, कृषि औजार, घरेलु सामग्री इत्यादि मिलता है। महिलाएं भी दुकानें सजाती हैं, खासकर ऐपण की गयी थाली, गागर आदि बेचती हैं। कुछ लोग पीरूल से बनाया गया हस्तनिर्मित सामान भी बेचते हैं। मेले में कुछ लोग अनाज बेचने के लिए आते हैं। भट्ट, गहत की दाल और

हस्तनिर्मित ऊनी कपड़े बेचने के लिए भी लोग आस–पास के इलाकों से आते हैं।

मेले में द्वाराहाट क्षेत्र ही नहीं बल्कि अन्य स्थानों से भी लोग सामान बेचने के लिए आते हैं। मेले में वस्तुएं सस्ती मिलती हैं। इस कारण लोग खूब खरीददारी करते हैं। पहाड़ी मसाला भी बेचा जाता है। बच्चों के खेलने के लिए झूला इत्यादि लगाया जाता है। इतनी भीड़ होती है कि बहुत बड़ी संख्या में पुलिस कर्मचारी आते हैं। वे मेले की व्यवस्था को सही बनाये रखते हैं। भीड़ को नियंत्रित करते हैं।

स्याल्दे बिखौती के मेले को मीना बाजार के नाम से भी जाना जाता है। रात को मंच पर कई कार्यक्रम होते हैं। नृत्य, संगीत से भरपूर कार्यक्रमों को लोग उत्साह से देखते हैं।

यह मेला दो स्थानों पर लगता है। पहला मेला चैत्र मास की अन्तिम तिथि से शुरू होता है। यह आयोजन द्वाराहाट बाजार से आठ किमी. की दूरी पर स्थित प्रसिद्ध शिवमंदिर विमाण्डेश्वर में लगता है। दूसरा मेला जो बैशाख माह की पहली तिथि से शुरू होता है, द्वाराहाट में लगता है। विमाण्डेश्वर मंदिर में ग्रामवासियों की अत्यधिक भीड़ रहती है। स्याल्दे बिखौती मेले को बुढ़त्यार भी कहा जाता है।

यह मेला धार्मिक महत्व रखता है। लोग धार्मिक अनुष्ठानों में भाग लेते हैं। स्याल्दे बिखौती मेला उत्तराखण्ड का एक प्रसिद्ध मेला है। जो हमारी सांस्कृतिक, सामाजिक, ऐतिहासिक थाती को बचाने और बढ़ाने का काम निरंतर करता रहता है। मेलों के आयोजन से हमारी संस्कृति भी संवरती है।

◆◆●◆◆

संस्था से जुड़ाव

सुमन नेगी

सितम्बर 2021 में नव ज्योति महिला कल्याण संस्थान गोपेश्वर में मार्गदर्शिका का कार्यभार छोड़ने के बाद आज फिर नन्दा पत्रिका के लिए एक लेख लिख रही हूँ। अब एक कार्यकर्त्ता के रूप में संस्था और उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान से नहीं जुड़ी हूँ पर आज भी दिल से वही जुड़ाव महसूस करती हूँ। आज पत्रिका के लिये कुछ लिखने की जानकारी मुझे हमारे गाँव के महिला संगठन के ग्रुप में आये हुए एक संदेश से हुई। इस मैसेज को हमारे गाँव में संचालित ही रहे शिक्षण केन्द्र की शिक्षिका ने डाला था। इस मैसेज को देखते ही मेरे मन का जुड़ाव और भावनाएं मुझे रोक नहीं पायी। रोक भी कैसे पातीं? मेरा आधार–जुड़ाव, जो कुछ मैंने उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान के साथ कार्य के दौरान सीखा, वह किसी बहुमूल्य खजाने से कम नहीं है। मैं ही नहीं, मेरी तरह न जाने कितनी अन्य लड़कियों और महिलाओं को उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान के कारण पंख मिले और वे अपनी–अपनी मंजिलों तक पहुँची हैं।

उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान अल्मोड़ा जिस तरह से महिलाओं और किशोरियों के साथ–साथ ग्रामीण इलाकों के विकास के लिए कार्यरत है उस के लिये सदैव आभारी रहूँगी। यह संस्थान महिलाओं और किशोरियों के लिए एक आवाज और उम्मीद की किरण है। संस्थान के सहयोग से स्त्रियाँ अपने भय से लड़ पाती हैं, समाज से जुड़ पाती हैं। ये मात्र लिखने के लिए शब्द नहीं हैं बल्कि मैं अपने मन के भावों को सच्चाई के साथ व्यक्त कर रही हूँ। मेरे व्यवहार में बदलाव आया है। संस्थान से जुड़े सभी सदस्यों के

प्रति मेरा आत्मीयता का भाव रहा है। ये लोग सदैव मेरे लिए आदर्श और प्रेरणास्रोत रहे।

2021 के बाद मैंने अपनी पढ़ाई की तैयारी के लिए समय निकाला। तत्पश्चात् कुछ समय, करीब एक साल तक, रीप परियोजना में कार्य किया। भाई की नौकरी लगने के बाद फिर अपनी पढ़ाई करने का ख्याल मन में आया तो देहरादून चली आयी। यहाँ आकर नेट की तैयारी शुरू की। दो बार नेट की परीक्षा उत्तीर्ण कर पायी हूँ पर संघर्ष अभी भी चल रहा है। अभी भी शिक्षक–भर्ती की तैयारी कर रही हूँ। सामाजिक कार्य में मेरी गहरी रूची रही है इसलिए साथ–साथ मैंने एम.एस.डब्लू. भी पूर्ण कर लिया है। मेरा यह मानना है कि समाज को विकसित करने के लिए सबसे पहले हमें खुद को विकसित करना होगा। हमारे जीवन में बदलाव का सर्वोतम साधन शिक्षा है। मैं आगे भी समाज के लिए कार्य करना चाहूँगी। इसके लिए किसी ऐसी जगह पहुँचना होगा जहाँ पहले खुद सशक्त बन सकूँ।

मेरी पारिवारिक पृष्ठभूमि सामान्य रही है परन्तु जीवन मैं जो भी अवसर मिला उसे निष्ठा से पूर्ण किया। उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान से जुड़ना मेरे लिए वरदान की तरह है। अगर यहाँ नहीं पहुँचती तो शायद ही कभी गाँव से बाहर निकल पाती। मेरा मानना है कि अगर मैं परिस्थितियों से लड़ सकती हूँ तो हर कोई कर सकता है। बस एक कदम बढ़ाने की जरूरत है। यही मैंने पहली बार घर से बाहर आ कर अल्मोड़ा में किशोरी संगठन की गोष्ठियों में सीखा था। यही बात मेरे लिए सदैव स्मरणीय रही है।

◆◆●◆◆

सब ठीक है

सुमन नेगी

चुप है कोई कोना भीतर,
जहाँ भावनाएं साँस रोके खड़ी हैं
मैं लिखना चाहती हूँ
उन भावों को
जो वर्षों से शब्दों की राह तकते हैं।
मैं लिखना चाहती हूँ
समाज की मौन क्रूरता को
जहाँ न्याय बस किताबों में रहता है
सत्य बेबस नजरों से झाँकता है।
मैं लिखना चाहती हूँ
उस दंभ को
जो रौंद देता है मासूमियत
झूठी प्रतिष्ठा के लिए
सच को कफन में लपेट देता है।
मैं लिखना चाहती हूँ
हर नारी की चुप्पी और सीख को
जो आँसू पीकर भी मुस्कुराती है
क्योंकि 'सब ठीक है' कहना जरूरी होता है।
मैं लिखना चाहती हूँ
गरीबी की फटी चादर तले
सिसकते सपनों की जलती रातें
मजबूरी में पके हुए बचपन की खामोशी।
मैं लिखना चाहती हूँ
उस प्रेम को जो ठुकराया गया बार–बार
जो दिल में रह गया
मगर समाज की बंद आँखों से देखा न गया।
और सबसे ऊपर
मैं लिखना चाहती हूँ
अपने भीतर की उस हलचल को
जो डर में बदलती है
क्योंकि 'अंदर का सच' बाहर कहने का साहस नहीं होता।
पर अब लिखूँगी
क्योंकि सच को दबाना, खुद को खो देना है
और जो सहजता से कहता है
वही एक दिन सच के साथ जीता है।।

◆◆●◆◆

जंगलों में आग लग रही है

कलावती मेहता

मेरे गाँव का नाम रातिर केठी है। यह गाँव हिमालय की वादियों में नामिक ग्लेश्यिर के पास बसा हुआ है। यह एक सीमान्त गाँव है जो बागेश्वर जिले के कपकोट ब्लॉक में आता है। हमारे गाँव में कई प्रकार के देवी–देवताओं के मंदिर एवं अनेक पवित्र स्थल हैं। सभी ग्रामवासियों की इन में गहरी आस्था एवं विश्वास है। इसी विश्वास एवं आस्था के कारण हर वर्ष इन स्थलों में कई प्रकार के मेले तथा विशेष पूजा–अनुष्ठानों का आयोजन किया जाता है। रातिर केठी चारों तरफ से हरे–भरे जंगलों, नदियों, झरनों और हिमालय की चोटियों से घिरा हुआ है। हमारे गाँव के सबसे निचले भाग से राम गंगा नदी गुजरती है। यह नदी नामिक ग्लेश्यिर से निकलती है।

हमारे गाँव में आज भी पशुपालन, खेती–बाड़ी की जाती है। सुबह की शुरूआत चिड़ियाँ की मधुर आवाज एवं निर्मल वातावरण से होती है। सूरज ऊँचे स्थलों पर किरणें बिखेरता है तो ऐसा लगता है जैसे श्वेत हिम शिखरों और हरे–भरे पर्वतों को किसी ने स्वर्ण–मुकुट से सुशोभित कर लिया हो। गाँव में आज भी परम्परागत कृषि होती है परन्तु अब लोग इसे जैविक खेती कह रहे हैं। मुख्य फसलों में मडुआ, बाजरा, गेहूँ, दालें आदि उगायी जाती हैं। वर्तमान समय में अब भूमि उतनी उपजाऊ नहीं रही, जितनी विगत वर्षों में हुआ करती थी।

अब लोग गाँव में खेती नहीं करना चाहते हैं। बहुत से लोगों ने भूमि को बंजर कर दिया है जो कि एक समस्या का कारण बन रहा है। ज्यादातर लोग शहरों की तरफ पलायन कर रहे हैं। पहले लोग अपने–अपने खेतों में खुद अनाज को उगा कर घर में उपयोग करते थे। आज बाजार से खरीद कर खा रहे हैं। इस कारण उन्हें धन व्यय करना पड़ रहा है जबकि आमदनी के साधन अत्यंत सीमित हैं। जो संसाधन पहले मुफ्त में उपलब्ध रहते थे वे धीरे–धीरे छीजते जा रहे हैं।

रातिर केठी गाँव के चारों ओर हरे–भरे पहाड़, पर्वत, नदियाँ हैं। इस कारण रातिर केठी का इलाका बहुत ही सुंदर और चारों ओर हरियाली से ढ़का हुआ एक मनोरम स्थान प्रतीत होता है। आजकल एक समस्या यह हो गयी कि जंगलों में आग लग जाती है। कई जगहों पर तो मानव खुद आग लगा देता है। इस से जंगली जानवरों, पेड़–पौधों तथा कई प्रकार के सूक्ष्म जीवों की जान चली जाती है। जंगलों की आग से पर्यावरण अशुद्ध हो जाता है। मनुष्यों को

जंगलों में आग नहीं लगानी चाहिए। अगर जंगल ही नहीं रहेगा तो सभी जंगली पशु गाँवों की तरफ आने लगेंगे। इस से मानव को जंगली जानवरों का डर बना रहेगा। खेतों में फसल भी नष्ट हो जायेगी।

हमारे गाँव में एक माध्यमिक विद्यालय एवं एक इण्टर कॉलेज है। ग्राम शिक्षण केन्द्र भी है जो उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान के माध्यम से इस क्षेत्र के कई गाँवों में खोले गये हैं।

मेरे केन्द्र का नाम ग्राम शिक्षण केन्द्र रातिर केठी है। केन्द्र में कुल चौबीस बच्चे आते हैं। मैं इस केन्द्र में एक जुलाई 2024 से जुड़ी हूँ। जब में शिक्षण केन्द्र में जाती हूँ तो सबसे पहले साफ–सफाई करती हूँ। बच्चों के आने के बाद प्रार्थना कराती हूँ। फिर विषय के अनुसार गतिविधियाँ होती हैं। सभी बच्चे केन्द्र में साफ–सफाई के साथ आते हैं। केन्द्र में बच्चों को तरह–तरह के खेल कराये जाते हैं। जैसे–बच्चे फुटबॉल, रस्सी–कूद, बैडमिन्टन इत्यादि खेलते हैं।

हर रविवार को बच्चे अलग–अलग कार्य करते हैं। कभी कागज व मिट्टी का कार्य करते हैं, तो कभी चार्ट बनाते हैं। केन्द्र में कहानियों की पचास किताबें हैं। बच्चे रोज केन्द्र में किताबें पढ़ते हैं। सभी बच्चों को किताबें पढ़ना बहुत अच्छा लगता है। जब हमारे गाँव में केन्द्र नहीं था तो बच्चे स्कूल से घर आने के बाद कभी गधेरों में नहाने तो कभी खेलने के लिये चले जाते थे। यहाँ तक कि अपने परिजनों का कहा भी नहीं मानते थे, ना ही पढ़ाई करते थे। एक जुलाई 2024 से बच्चे केन्द्र में आने लगे। अब सभी बच्चे केन्द्र में नियमित रूप से आते हैं। बच्चों में बहुत परिवर्तन हुआ है। वो पढ़ाई, खेल और अन्य गतिविधियों में आगे निकल रहे हैं।

हमारे गाँव में महिलाओं एवं किशोरियों के संगठन बनाये गये हैं। हर महीने में एक बार महिलाओं व किशोरियों के संगठन में गोष्ठी की जाती है। गाँव की सभी महिलाएं व किशोरियाँ गोष्ठी में आती है। हर प्रकार की बाते गोष्ठी में रखती हैं। जब हमारे गाँव में केन्द्र नहीं था तो गोष्ठी भी नहीं होती थी। जब से गाँव में केन्द्र खुला तो हर महीने गोष्ठी होने लगी। उससे पहले महिलाओं को गोष्ठी के बारे में कुछ पता नहीं था। उन्हें सिर्फ अपने काम से मतलब था। घास–पत्ती, लकड़ी लाना, जंगल जाना यही काम करते थे। जब से हमारे गाँव में गोष्ठी होने लगी तो महिलाएं अपनी बातें कहना सीखने लगीं। अब गाँव में सभी महिलाओं व किशोरियों में परिवर्तन देखने को मिल रहा है। संगठनों के माध्यम से रास्तों की सफाई, मंदिरों की सफाई, एक दूसरे की मदद करना तथा सभी ग्रामवासियों की शिक्षा के कार्य हो रहे हैं।

◆◆●◆◆

अल्मोड़ा में किशोरी बैठक

विजय प्रणिता चौहान

हमारे गाँव में किशोरी बैठक होती है। कभी–कभी बैठक एक महीने में दो या तीन बार होती है। इस बैठक को आयोजित करने का मुख्य उद्देश्य है कि किशोरियों को किशोरावस्था के बारे में अधिक से अधिक जानकारी दी जाये। किशोरावस्था व्यक्ति के जीवन का एक ऐसा पड़ाव होता है जिसमें उसे स्वयं शरीर में होने वाले परिवर्तनों को महसूस करना और उन्हें समझना है। इस अवस्था में लड़कों और लड़कियों के शरीर में अनेक बदलाव होते हैं। किशोरी बैठक में इन बदलावों पर चर्चा की जाती है। किशोरी बैठकों में बताया जाता है कि हमें खुद के शरीर को स्वच्छ रखने के लिए अपनी सोच और व्यवहार में बदलाव लाना है।

एक मनुष्य के जीवन में किशोरावस्था का महत्वपूर्ण स्थान है, ये बातें हमें बैठकों द्वारा पता चलती हैं। जब हम उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान अल्मोड़ा में गये तो वहाँ काफी कुछ नया सीखने को मिला। हमें अल्मोड़ा जिला काफी सुन्दर लगा। हमारे रहने की जगह भी बहुत सुन्दर थी। वहाँ पर सभी सुविधाएं थी। सुबह हमें नाश्ता करवाया गया। उसके बाद हम ने अनेक गतिविधियाँ की। सुबह हमें योग और व्यायाम करवाया गया। परिचय सत्र हुआ। ग्रुप में चार्ट बनाना व अन्य कार्य किये।

हमने किशोरियों के संगठन बनाने के बारे में सीखा। स्वास्थ्य–संबंधी चर्चा की। मोबाइल फोन से होने वाले लाभ एवं हानि को समझा। इसके साथ ही ग्राम परितंत्र और जलवायु परिवर्तन के विषय में बातचीत की। उत्तराखण्ड में आपदाओं की तीव्रता बढ़ी है। आपदा के दुष्प्रभावों को कम करने के तरीके जाने।

एक अन्य सत्र में हमने महिलाओं के जीवन में हो रहे बदलावों को समझा। पिछली पीढ़ी की स्त्रियां हमारी पीढ़ी से भिन्न सोच रखती हैं। भोजन तथा कपड़ों की पसंद भी आज की पीढ़ी से अलग है। आजकल नवयुवतियाँ और किशोरियाँ गाँव में रहकर खेती नहीं करना चाहतीं। वे कोई नौकरी या आय–सृजन के लिये सिलाई, बुनाई, कम्प्यूटर, ब्यूटीशियन का काम करना चाहती हैं। अल्मोड़ा गोष्ठी में हमने इस विषय पर गहराई से चर्चा की।

अल्मोड़ा में खाना भी सात्विक और अच्छा था। भोजन को बांटने की जिम्मेदारी सभी की थी। हमें छोटी–छोटी टोलियों में बाँटा गया। टोलियों की

संख्या के अनुसार किसी ने प्रशिक्षण कक्ष की सफाई का कार्य किया तो किसी ने रोटी बनाने में मदद की। किसी एक टोली को खाना बाँटने का काम मिला। इस प्रकार हमने एक–दूसरे की मदद की और टोलियों में काम करना सीखा। हमें बहुत सी नयी जानकारियाँ मिली। यह भी सीखा कि नवयुवतियाँ गाँव में रह कर भी आय–सृजन के काम कर सकती हैं। ऐसे कार्यक्रमों के संचालन में संस्था ग्रामवासियों की मदद करती है।

◆◆●◆◆

खकोली भूमि

राधा बोरा

खकोली भूमि तू अति छै प्यारी
तैं छ य तन–मन सारी।
तू भूमि खातिर दियु जाना
सामणी छ य हनुमंत थाना।
वार उदेपुर पार छ बिन्ता
बीच में छ य गगास गाड़।
गौं माथि झूलि रै भैकुवे डाली
खेतों में लागी रे, गेहूँ की बाली।
य भूमि खातिर दियु जाना
सामणी छ य शिवजी को थाना।
खकोली भूमि तू अति छै प्यारी
तैं छ य तन–मन सारी।

◆◆●◆◆

कम्प्यूटर केन्द्र

विपाशा रावत

मेरा गाँव दोगड़ी–काण्डई गोपेश्वर मुख्यालय से सोलह किमी. की दूरी पर स्थित है। मैं अपने गाँव में कम्प्यूटर केन्द्र की शिक्षिका हूँ। हमारे गाँव में एक अप्रैल 2023 से कम्प्यूटर केन्द्र खोला गया। केन्द्र गाँव के महिला संगठन के प्रयासों के फलस्वरूप खोला गया। मैंने केन्द्र का संचालन सितम्बर 2024 में शुरू किया। इस से पहले कोई अन्य शिक्षिका केन्द्र चलाती थी।

जब केन्द्र की शुरूआत हुई तो उसके प्रथम बैच में मैंने स्वयं कम्प्यूटर सीखा। उसके बाद बच्चों को कम्प्यूटर सिखाया। मैंने अब तक सत्ताइस बच्चों को कम्प्यूटर में काम करना सिखाया है। उन्हें उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान की तरफ से सर्टिफिकेट भी मिल चुके हैं। बच्चे नियमित रूप से केन्द्र में आते हैं। सोमवार को छुट्टी रहती है। रविवार के दिन सभी बच्चों के द्वारा मिलकर केन्द्र की साफ–सफाई की जाती है। केन्द्र के पास पक्का रास्ता न होने के कारण वहाँ बहुत सारी घास उग जाती है। आजकल बरसात के मौसम में बच्चे और मैं मिलकर हर रविवार को घास साफ कर लेते हैं।

उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान अल्मोड़ा द्वारा केन्द्र में सभी सुविधाएं उपलब्ध करायी गयी हैं। केन्द्र में इन्वर्टर की व्यवस्था है। बिजली चले जाने पर बच्चे कम्प्यूटर पर कार्य करना जारी रख पाते हैं। उनका समय व्यर्थ नहीं जाता।

महिला संगठनों के साथ नियमित रूप से बैठक होती है। संगठन की सदस्याएं भी केन्द्र को देखने के लिये आती हैं। कभी–कभी संगठन की सदस्याएं केन्द्र की साफ–सफाई करती हैं। हमारे गाँव में महिलाएं नियमित रूप से अपनी बैठकें करती हैं। इन बैठकों में वे मुझे भी बुलाती हैं। हम बैठक में कम्प्यूटर केन्द्र से संबंधित बातें भी करते हैं। संगठन मजबूत होने के कारण सभी महिलाएं बैठक में उपस्थित होती हैं।

बच्चों को सिखाने के साथ–साथ मैं स्वयं भी रोज कुछ न कुछ नया सीखती हूँ। मुझे बच्चों को कम्प्यूटर सिखाना तथा स्वयं कम्प्यूटर सीखने केन्द्र में जाना अच्छा लगता है। गाँव के सभी बच्चों को लाभ मिलता है। जो बच्चे बाजार तक जाकर कम्प्यूटर की फीस नहीं दे पाते थे वे अब गाँव में रहते हुए ही सीख गये हैं। दोगड़ी–काण्डई गाँव में अधिकतर बच्चों ने कम्प्यूटर सीख लिया है। गाँव में केन्द्र खुलने से सभी बच्चों को फायदा हुआ है। उनके माता–पिता भी खुश हैं। संस्था की मदद से बच्चों के विकास के साथ–साथ संगठन भी मजबूत हुआ है, लोग जागरूक हुए हैं।

◆◆●◆◆

उत्तराखण्ड में आपदा

लक्ष्मी नेगी

उत्तराखण्ड एक बहुत सुंदर राज्य है। यह ऊँचे–ऊँचे पहाड़ों और हिमाच्छादित चोटियों के लिए प्रसिद्ध है। उत्तराखण्ड को देव भूमि या 'देवताओं की भूमि' भी कहा जाता है। आजकल देवभूमि में हो रही आपदाओं के कारण सभी लोगों के मन में डर भरा हुआ है। इस वर्ष उत्तराखण्ड में आपदाएं अपनी चरम सीमा पर पहुँची हुई है।

उत्तरकाशी जिला मुख्यालय से लगभग अस्सी किमी. दूर धराली कस्बे में पाँच अगस्त 2025 को जो मंजर दिखायी दिया, वो किसी के भी दिल को दहला देने वाला था। दोपहर डेढ़ बजे के आसपास खीरगंगा या खीरगाड़ में पानी और

मलवे का जो तेज बहाव आया उसने धराली कस्बे को अपने आगोश में ले लिया। उसके बाद हर्षिल के आर्मी कैंप और हेलीपैड को भी नुकसान होने की खबरें सामने आयी। उत्तरकाशी के जिला प्रशासन ने धराली में अनेक लोगों के मारे जाने और लापता होने की प्रारंभिक जानकारी दी। तबाही की व्यापकता को देखते हुए यह संख्या बताई गयी संख्या से ज्यादा होने की आशंका व्यक्त की जा रही है। मनुष्यों के साथ–साथ घरों, खेतों और होटलों को भी बहुत नुकसान हुआ।

पूरे प्रदेश में अगस्त 2025 में मूसलाधार बारिश का सिलसिला जारी रहा। जगह–जगह राष्ट्रीय राजमार्ग समेत छोटी–बड़ी अनेक सड़कों के अवरूद्ध होने, पुलों के बहने, सड़कों, बिजली के तारों के टूटने की खबरें आती रही। उत्तराखण्ड एवं अन्य पहाड़ी क्षेत्र जैसे हिमांचल प्रदेश, जम्मू–कश्मीर में अतिवृष्टि, बादल फटना, भूस्खलन जैसी घटनाएं अब जैसे रोज की ही बात हो

गयी है। बीते कुछ सालों में अचानक बाढ़ जैसे हालात भी लगातार बन रहे हैं। वैज्ञानिकों का मत है कि जलवायु परिवर्तन ने पर्वतीय क्षेत्रों में मौसम की अनिश्चितता को बढ़ा दिया है।

गाँवों से पलायन के कारण निरंतर फैलते जा रहे कस्बों और शहरों की ओर देखें। सड़क पर खड़े हो कर, ऊपर की ढ़लान पर बने बहुमंजिला इमारतों को देखने पर ऐसा लगता है कि इन इमारतों का एक हिस्सा मानो झूल रहा हो और यह किसी भी तेज झटके से जमीन पर आ जाये। पर्वतीय क्षेत्र में विशालकाय भवनों का लगातार निर्माण हो रहा है। नदियों और गधेरों के मुहानों पर घर, होटल, रिजार्ट आदि बहुमंजिला भवन तेजी से बन रहे हैं।

जून 2013 में केदारनाथ के साथ ही उत्तराखण्ड के कई हिस्सों में भीषण आपदा आयी थी। केदारनाथ में ही कितने लोग मारे गये। इसकी संख्या तक ठीक से सामने नहीं आयी। उस आपदा की तीव्रता को देख कर लगता था कि सरकारें और नीति–निर्धारक, जरूर सबक सीखेंगे। लेकिन बारह साल बाद देखें तो लगता नहीं कि कोई सबक सीखा गया है।

इस वर्ष धराली के साथ ही हर्षिल आपदा का शिकार बना है। सुन रहे हैं कि हर्षिल क्षेत्र में गंगोत्री तक सड़क को चौड़ा करने के लिए देवदार के पेड़ों को चिन्हित किया जायेगा। अगर यह सब ऐसे ही चलता रहा तो वह दिन दूर नहीं जब प्रकृति रौद्र रूप में अपना कहर बरसायेगी और हम कुछ नहीं कर पायेंगे। मनुष्य को लालच में आकर ऐसा कोई कदम नहीं उठाना चाहिए जिससे उसका अस्तित्व खतरे में पड़ जाये।

◆◆●◆◆

सिमली माँ चण्डिका द्योरा यात्रा

वन्दना पंवार

चमोली जिले के कर्णप्रयाग ब्लॉक के सिमली बाजार में माँ राज राजेश्वरी का प्राचीन मंदिर है। यह मंदिर कर्णप्रयाग से लगभग पाँच किमी. की दूरी पर स्थित है। इस मंदिर को गोल गोविन्द गुणसाई के नाम से जाना जाता है। मूलतः इस मंदिर में विष्णु भगवान विभिन्न रूपों में विराजमान है। साथ ही मंदिर में माँ चण्डिका भी विराजमान हैं।

यह देवी मूल रूप से छः–सात गाँवों की मानी जाती है। इसमें सेनू, सिमली, सुन्दरगाँव, जाख आदि ससुराल पक्ष के गाँव माने जाते हैं। ये देवी को

नौ माह की यात्रा कराते हैं। कोली और पुडियाणी मैती गाँव माने जाते है। बालदेव कुंडवाल गाँव के माने जाते हैं। जब माँ चण्डिका अपनी द्योरा या बन्याथ यात्रा पर जाती है तब वे गर्भगृह से बाहर आती हैं। बाहर आकर माता श्रद्धालुओं को दर्शन और आशीर्वाद देती हैं।

सात सितम्बर 2024 को माँ चण्डिका अपने गर्भगृह से नौ माह की द्योरा यात्रा के लिए बाहर आयीं। उस दौरन माँ चण्डिका को चार दिन उनके लिये नियत एक विशेष सुंदर, सजाये गये स्थान पर रखा गया। यहाँ पर सभी भक्तगणों ने माँ के दर्शन किये। इस बीच चार दिन तक सांस्कृतिक कार्यक्रम तथा एरवालों का नृत्य हुआ। दस सितम्बर 2024 की रात को ब्रह्म बंधन स्थापित किया गया। मौखिक जानकारी के मुताबिक ब्रह्म गुरू चण्डिका माँ के निशाण में ऊपर की डोली में तीन सौ पैंसठ जड़ी–बूटियों के साथ शक्ति चढ़ाते हैं। निषाण के पुजारी ही ब्रह्म गुरू कहलाते हैं। उनमें आध्यात्मिक शक्ति होती है।

ग्यारह सितम्बर, एक बजे दोपहर को ब्रह्म गुरू द्वारा माँ चण्डिका का फर्स (काष्ठ मूर्ति) एवं ब्रह्म भक्तों के बीच लाया गया। इसके साथ ही ब्रह्म–नृत्य

हुआ। तत्पश्चात् सिर्फ ब्रह्म ने मंदिर की परिक्रमा की। यहाँ से ब्रह्म पीछे नहीं मुड़ते। यात्रा नियत मार्ग पर सीधे रतूड़ा गाँव की ओर चलती है। यह यात्रा आटा गाड़ के मध्य से हो कर गुजरती है। इस प्रकार माँ चण्डिका ने अपने प्रथम–पड़ाव रतूड़ा गाँव की ओर प्रस्थान किया।

गैरोली गाँव के श्रद्धालुओं को द्योरा यात्रा के दौरान पूजा का अतिरिक्त भार दिया जाता है। गाँववासी बढ़चढ़ कर भागीदारी निभाते हैं। कहा जाता है कि कई वर्षों पूर्व माँ चण्डिका का फर्स पिण्डर नदी में बह कर आया था। उसी वक्त पास के एक गाँव के ब्राह्मण नदी में स्नान करने आये थे। उन्होंने माँ चण्डिका का फर्स देखा। गाँव में तय हुआ कि देवी के फर्स को पुनः पिंडर नदी में विसर्जित कर दें। माँ के फर्स को पुनः नदी में ससम्मान विसर्जित कर दिया गया। इस संबंध में अन्य किंवदंतियाँ भी प्रचलित हैं।

माँ चण्डिका का फर्स पिंडर नदी में बहता हुआ अंततः सिमली गोविन्द मठ के पास पहुँचा और तट से जा टकराया। देवी ग्रामवासियों के सपनों में आयीं। सपने में माँ चण्डिका ने अपने लिये स्थान माँगा। ग्रामवासी नदी में गये तो देवी की काष्ठ मूर्ति मिल गयी। उन्होंने माँ चण्डिका को वहीं पर स्थान दिया। सभी ग्रामवासियों ने आपस में बातचीत करके माँ चण्डिका का मंदिर बनाया। देवी ने भ्रमण में जाने की बात भी सपने में बताई। तभी से माँ चण्डिका को बारह वर्षों बाद द्योरा यात्रा के लिए उत्तराखण्ड के जनपद चमोली, रूद्रप्रयाग, पौड़ी गढ़वाल एवं उत्तरकाशी जिलों के दौ सौ बावन चयनित गाँव में भ्रमण कराया जाता है।

इस वर्ष यात्रा चौदह साल के बाद आयोजित की गयी। मंदिर के पुजारी द्योरा यात्रा में शामिल नहीं होते। उस दौरान मंदिर के कपाट भी बन्द रहते हैं। पूजा अर्चना पुजारी द्वारा मंदिर के बाहर से ही की जाती है। द्योरा यात्रा के भ्रमण के समय गैरोली गाँव के गैरोला पंडित पूजा अर्चना करते है। माँ चण्डिका भ्रमण में जाने से पहले सेनू, सिमली, सुन्दरगाँव, जाख, कोली, पुडियाणी और गैरोली गाँव आदि में भ्रमण करती है। सभी गाँवों में भ्रमण करते हुए छः माह के बाद सिमली में समुद्र–मंथन के लिए आती है। अट्ठारह मार्च 2025 को माता की कृपा से समुद्र–मंथन हुआ। समुद्र–मंथन के दिन देवताओं और असुरों के बीच युद्ध होता है। युद्ध में देवताओं की जीत होती है। इसमें प्रसाद के रूप में सभी को अमृत (मट्ठा, छांछ, मक्खन) दिया जाता है। इसके बाद माता अपने आगे के पड़ाव सिमली गाँव (पधान के चौक में एक दिन) के लिए प्रस्थान करती है।

अप्रैल 2025 को जय माँ चण्डिका बारह शक्ति (उत्तरकाशी) गयी। ग्रामवासी बताते हैं कि यह यात्रा श्रीनगर तक पैदल और वहाँ से गाड़ी में की गयी। वहाँ माता का शक्ति परीक्षण काशी विश्वनाथ मंदिर में होता है। शक्ति परीक्षण में ब्रह्म शिवजी के मंदिर में लगे हुए त्रिशूल की परिक्रमा करते हैं। मान्यता है कि शक्ति परीक्षण में ब्रह्म को त्रिशूल को नहीं छूना है। त्रिशूल को बिना छुए तेजी से घूमते हुए यह परिक्रमा की जाती है। वहाँ पर विजयी होकर माँ आगे के पड़ाव के लिए प्रस्थान करती है। एक महीना बीतने के बाद माँ चण्डिका अपने सात गाँवों में दुबारा आती है, सभी को आशीर्वाद देती है। तत्पश्चात् अपनी दिशा–ध्याणियाँ से विदा लेती है। दिशा ध्याणियाँ का मतलब है कि इन सात गाँवों की विवाहित स्त्रियाँ अपने मायके में आकर माँ चण्डिका का आशीर्वाद प्राप्त करती हैं।

अट्ठाइस मई 2025 को जय माँ चण्डिका अपने मैती गाँव कोली और पुडियाणी के ग्रामवासियों को लेने आयी। इन्हीं दोनों गाँवों के निवासियों के द्वारा माता का सिरा, जो बाबली घास से बनता है, बांधा जाता है। उसके बाद फर्स, ब्रह्म एवं अन्य सभी भक्तजन बानातोली (देवी का स्थान) की तरफ जाते हैं। कहा जाता है कि सिमली गाँव के पधान एवं ग्रामवासी सिरा डाली लाते हैं। सिरा डाली चुनरी से ढ़की रहती है।

बालदेव–भगवान का बाल रूप हैं। यात्रा में ऐरवाल के आगे बालदेव चलते हैं। गरूड़छाला के पास प्रतीकात्मक बना हुआ एक गरूड़ आकाश में विचरता आता है। वह बालदेव के सिर पर चोंच मारता है। वहीं से बालदेव की विदाई हो जाती है। बालदेव वहाँ से सिमली गाँव में जाते हैं। जब तक माँ चण्डिका बानातोली में रहती हैं, बालदेव सिमली गाँव में रहते हैं। माँ चण्डिका के गर्भ–गृह में वापस जाने के बाद बालदेव की विदाई की जाती है।

बानातोली पहुँचने पर माता की मूर्ति को मंदिर में नहीं रखा जाता। वहाँ पर माता के लिए एक सुन्दर सा स्थान सजा रहता है। माता नौ दिनों तक वहीं पर विराजमान रहती हैं। सिरा ढूँढ़ने के लिए ब्रह्म पास ही भूमि पर जाते हैं। वहाँ पर उन्हें बाबिल घास मिलती है। बाबिल को बानातोली में लाते हैं, फिर सिरा बटने का काम होते हैं। उससे नौ कोठे बनाते हैं।

कोली और पुडियाणी के निवासी नौ दिनों तक दौड़–दौड़ कर सिरा बटते है। इसी बीच नौ दिनों तक सांस्कृतिक कार्यक्रम, ऐरवालों का नृत्य और जगन पुरूष की शादी होती है। माना जाता है कि जगन पुरूष के तीन सौ साठ विवाह हुए। बानातोली में नौ दिनों तक जगन पुरूष की चार शादियाँ हर दिन होती हैं। सभी श्रद्धालु बारात में जाने के लिए उत्सुक रहते हैं। माना जाता है जगन पुरूष की सभी दुल्हनों की मृत्यु हो जाती थी। इस कारण जगन पुरूष की तीन सौ साठ शादियाँ की गयी।

अंतिम दिन जगन पुरूष को कोई एक साधु या सज्जन व्यक्ति गड्डे में गिरा देते हैं। कहा जाता है कि जो व्यक्ति जगन पुरूष को गिराये वह भी मृत्योपरांत मोक्ष को प्राप्त होता है। वर्ततान में इसका कोई ठोस प्रमाण उपलब्ध नहीं है। अंतिम दिन ब्रह्म गुरू, ऐरवालों तथा पंडितों की विदाई होती है। माता के फर्स (मूर्ति) को छप्पर से निकालकर मंदिर में रखा जाता है। ब्रह्म को नदी में बहा देते हैं। इस समय सभी लोग बहुत भावुक हो जाते हैं। माता के सिरा को सभी लोग प्रसाद के रूप में ले जाते हैं। मायका पक्ष के होने के कारण कोली और पुडियाणी गाँव के निवासी सिरा को नहीं ले जाते।

माँ चण्डिका की यात्रा एक अत्यंत महत्वपूर्ण आयोजन है। श्रद्धालु इस यात्रा का बहुत आदर–सत्कार करते हैं। यात्रा में माँ चण्डिका कभी नाराज होती है और कभी अत्यंत प्रसन्न रहती हैं। सभी ग्रामवासी माता का आशीर्वाद पाने को लालायित रहते हैं। गढ़वाल क्षेत्र में माँ चण्डिका की यात्रा और पड़ाव संबंधी सभी मान्यताएं एवं परंपराएं अत्यंत रोचक और वैभवपूर्ण हैं। ग्रामवासी माँ चण्डिका की कृपा पर अटूट विश्वास रखते हैं। इस दिव्य परंपरा को स्थानीय लोगों ने निरंतर जीवंत बनाए रखा है। सिमली क्षेत्र की संस्कृति का एक अद्‌भुत हिस्सा गोल गोविंद गुणसाईं मंदिर की इन दिव्य परंपराओं में समाया हुआ है।

◆◆●◆◆

जानवरों का आतंक

गिरीश चन्द्र जोशी

पहाड़ों में गाँवों के खाली होने का एक मुख्य कारण जंगली जानवरों का प्रकोप है। पहले से भी पहाड़ों में जानवर होते थे। गाँवों में बाघ, बंदर, सियार, लंगूर और सौल का प्रकोप रहता था पर ऐसा आतंक न था। कुछ समय पहले पहाड़ों में सरकारी विभागों द्वारा खाली भूमि पर अनेक प्रकार के पेड़–पौधे लगाये गये। हमारे क्षेत्र में ग्रामवासियों ने विभाग से कहा कि चीड़ के ज्यादा पौधे न लगायें पर उनकी एक न चली। हमारे यहाँ चीड़ का पौधा अपने आप बगैर मेहनत से ही प्रचुर मात्रा में हो जाता है। विभाग से कहा गया कि चारा पत्ती वाले पेड़ लगायें।

धीरे–धीरे भूमि चीड़ के पेड़ों से आच्छादित हो गयी। चीड़ के छोटे पौधों को सौल (साही) अच्छा मानता है। जब तक सौल कम संख्या में थे, तब तक गाँव में खूब साग–सब्जी होती रही। आज के समय में बंदर, सुअर के साथ–साथ सौल का आतंक भी बढ़ गया है। मैंने स्वयं अपने घर के सामने के खेत में मक्का बोया था। कम से कम एक ही खेत में हमारे खाने लायक मक्का हो जाती थी। सौल ने सब फसल बर्बाद कर दी।

दूसरी बड़ी समस्या जंगली सुअरों के कारण हो गयी है। मैं मानता हूँ कि यह बाघ से भी ज्यादा खतरनाक जानवर है। छेड़ने पर यह सीधे हमला कर देता है। अगर जंगली सुअरों से निजात मिल सके तो पहाड़ों में खेत फिर से हरे–भरे हो सकते हैं। पहले से लंगूर घरों के नजदीक खेतों में नहीं आते थे। आज लंगूरों से भी बहुत परेशानी हो गयी है। पहले से बन्दर आते तो थे पर भगाने पर चले जाते थे। अब बन्दरों और लंगूरों के झुंड गाँवों में डेरा डाल देते हैं। वे ऊँचे–ऊँचे पेड़ों में बैठ जाते हैं और भागते नहीं।

इन जानवरों का अधिक संख्या में होना मनुष्यों की गलतियों के कारण ही है। खेतों के आस–पास पेड़ नहीं होने चाहिए। हमारे यहाँ फसल वाले खेतों के आस–पास पेड़ बिखरे हुए हैं। अब पहाड़ों में लोग लकड़ी का उपयोग कम करने लगे हैं। खाना बनाने के लिये गैस का उपयोग हो रहा है। इस कारण से खेतों के किनारे लगे हुए पेड़ बढ़ते जा रहे हैं, उनकी छँटाई नहीं हो रही।

गाँवों में अनेक प्रकार के लोग रहते हैं। एक तो वे हैं जिनके पास पैतृक धन और वर्तमान में रोजगार उपलब्ध है। एक अन्य वर्ग है जिसके पास पैतृक धन–सम्पत्ति नहीं है। वे लोग पहले भी गरीब थे, आज भी गरीब हैं। अगर वे

जंगलों में जायें तो उन्हें साथ चलने के लिए अन्य लोगों की जरूरत है। चूंकि गाँवों में अब अधिक लोग नहीं रहते तो उन्हें साथ नहीं मिल पाता है। अगर खेती करें तो उनके पास पर्याप्त खेत नहीं है। पहले सभी लोग मिलकर खेती करते थे। समय भी कट जाता था। अब पहाड़ों में समय निकालना मुश्किल हो गया है।

अगर नयी पीढ़ी पहाड़ों में रहना भी चाहे तो अपना गुजारा कैसे करे? इस कारण नयी पीढ़ी रोजगार के लिए अपने बच्चों के साथ शहरों की ओर पलायन कर रही है। घरों में केवल बूढ़े माता–पिता रहते हैं। अनेक घरों में वृद्ध बिल्कुल अकेले रहते हैं। अगर बच्चे बाहर जा भी रहे हैं तो वहाँ भी कुछ खास आमदनी नहीं है। आजीविका कैसे चलायें? गाँवों से शहरों की ओर गये हुए लोग वहाँ पर किराये के मकानों में रहते हैं। जितना कमाया वह धन बच्चों की पढ़ाई–लिखाई और घर चलाने में खर्च हो जाता है। हमारे पहाड़ों में कहावत है *''जतुक लिन गोरूल हगि, उतुके पिछोड़िं में लटपटाई, भमें काहैं छुटि''* वाली कहावत हो जाती है। बचत नहीं हो पाती। इस कारण लोग गरीब रह जाते हैं।

पहले हमने अपने घर में रहकर ही गुजारा किया। अब पहाड़ों में वे बातें नहीं रह गयी। पहले खेतों में अनेक प्रकार की फसलें होती थी। पहाड़ों की मुख्य खेती में मडुआ, मादिरा, धान होता था। मादिरा के साथ एक अन्य अनाज कोंड़ी भी होती थी, जो आज लुप्त हो चली है। गहत की दाल प्रचुर मात्रा में होती थी। इसका उपयोग दवा के रूप में भी होता था। अगर पेट में पथरी हो जाये तो इलाज घर में ही गहत की दाल से हो जाता था। हमारे खेतों में एक–एक बोरे तक गहत हो जाते थे। भट्ट की दाल भी प्रचुर मात्रा में होती थी। भट्ट बहुत फायदेमंद होती है। लोग इसकी दाल स्वयं खाते और गाय–भैंसों को भी खिलाते। पहाड़ों में सरसों भी बहुत मात्रा में होती थी जिससे तेल मिल जाता था। उसका खल पालतू जानवरों के काम आता था। यह भी आज लुप्तप्राय है। अगर पहाड़ों में जंगली जानवरों का आतंक समाप्त हो जाये तो खेत फिर पहले की तरह हरे–भरे हो सकते हैं। गाँवों से शहरों की ओर हो रहा पलायन भी कम हो सकता है।

◆◆●◆◆

गाँव में सुविधा

रंजना पंवार

मैं उत्तराखण्ड में चमोली जिले के विकासखण्ड कर्णप्रयाग के एक छोटे से गाँव कोली की निवासी हूँ। वर्तमान में डॉ. शिवानन्द नौटियाल राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय कर्णप्रयाग से बी.ए. की पढ़ाई कर रही हूँ। मैंने छः महीने का बेसिक कम्प्यूटर कोर्स अपने गाँव से चार किलोमीटर की दूरी पर स्थित एक अन्य गाँव जाख में पूरा किया। मैंने कम्प्यूटर का परिचय, विंडोज ऑपरेटिंग सिस्टम का उपयोग, एम.एस. वर्ड, एक्सेल, पावर पॉइंट और इंटरनेट का उपयोग सीखा।

बाद में मुझे शेप संस्था और उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान द्वारा कम्प्यूटर केन्द्र चलाने की जानकारी हुई। अपने गाँव में महिलाओं को बताया कि मैं गाँव में कम्प्यूटर केन्द्र चला सकती हूँ। इससे हमारे गाँव के बच्चों व किशोर–किशोरियों को लाभ होगा। अपने ही गाँव में रहते हुए कम्प्यूटर सीखने की सुविधा प्राप्त होगी। गाँव में बैठक के दौरान सभी महिलाओं ने कम्प्यूटर साक्षरता केन्द्र खोलने पर सहमति दी। संस्था द्वारा कम्प्यूटर केन्द्र को खोलने के विचार से सभी सहमत हुए।

मैं चौबीस मार्च, 2025 को पाँच दिवसीय कम्प्यूटर प्रशिक्षण के लिए उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान अल्मोड़ा में गई। मैंने बहुत सी

नयी–नयी चीजें सीखी। पहले दिन कम्प्यूटर को ऑन–ऑफ करने व कम्प्यूटर शब्दावली की पूर्ण रूप से जानकारी दी गयी। सोनमा सॉफ्टवेयर पर लेखन–वाइज टाइपिंग करना व एम.एस. वर्ड पर लेखन–वाइज टाइपिंग करना सिखाया गया। प्रशिक्षण में बेसिक जानकारी दी गयी कि बच्चों को कैसे सिखाना है, टाइम–टेबल क्या होगा आदि। हिन्दी व अंग्रेजी के अभ्यास की कॉपी दी गयी, जिस के जरिये शिक्षिका बच्चों के साथ टाइम–टेबल के हिसाब से काम कर

सके। कम्प्यूटर की बेसिक जानकारी हमें सरल तरीके से दी गयी। अल्मोड़ा में मेरी ट्रेनिंग बहुत अच्छे तरीके से हुई। प्रशिक्षण लेने के बाद मैंने अपने घर पर एक महीने तक कम्प्यूटर को चलाने का अभ्यास किया।

प्रशिक्षण एवं घर में अभ्यास हो जाने के बाद उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान अल्मोड़ा के द्वारा शेप संस्था बधाणी से कोली गाँव में कम्प्यूटर केन्द्र खोला गया। इसमें तीन महीने का बेसिक कम्प्यूटर कोर्स शामिल है। यह सुविधा कक्षा पाँच से आगे की कक्षाओं में पढ़ रहे बच्चों व अन्य सभी के लिए है। कम्प्यूटर केन्द्र के जरिये बच्चों को काफी लाभ हुआ। बच्चों को कम्प्यूटर सीखने की सुविधा अपने ही गाँव में उपलब्ध हुई है। मैं कम्प्यूटर केन्द्र में तीन महीने में नौ बच्चों को कम्प्यूटर सिखाती हूँ। बच्चे तीन–तीन के समूह में कम्प्यूटर सीखने आते हैं। समय तीन से छः बजे तक शाम का है। उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान द्वारा कम्प्यूटर के साथ–साथ कुर्सी, टेबल, चटाई व अलमारी आदि सुविधाओं की व्यवस्था की गयी है।

मैं कम्प्यूटर केन्द्र को टाइम–टेबल के अनुसार ही चलाती हूँ। सबसे पहले कम्प्यूटर का परिचय, अंग, ऑन–ऑफ करना व प्रत्येक दिन कम्प्यूटर की दो–दो शब्दावली को बताती हूँ। बच्चों को कम्प्यूटर की बेसिक चीजें बताती हूँ। उसके बाद माउस को चलाना व की–बोर्ड में उंगलियाँ कैसे रखते हैं, ये सभी कौशल सिखाती हूँ। केन्द्र में मार्गदर्शिका और हमारी संस्था के सचिव निरंतर आते रहते हैं। वे सभी केन्द्रों का मार्गदर्शन करते हैं, शिक्षिकाओं की मदद करते हैं।

मुझे कम्प्यूटर केन्द्र को चलाते हुए तीन महीने पूरे होने को हैं। सभी बच्चे एम.एस. वर्ड व सोनमा सॉफ्टवेयर पर टाइपिंग, कट–पेस्ट, एम.एस. वर्ड एवं विंडोज के सारे कमांड सीख गये हैं। एक्सेल व पावर पाइंट आजकल सीख रहे हैं। तीन महीने का बेसिक कम्प्यूटर कोर्स लगभग पूरा हो चुका है। तीन महीने के बाद परीक्षा होनी है। परीक्षा पन्द्रह अंक की लिखित एवं सौ अंक की हिन्दी एवं अंगेजी टाइपिंग टेस्ट के साथ होगी। इसका समय एक घण्टे का है। अभी तक दो बार बच्चों के टेस्ट हो चुके हैं। अब मेरे केन्द्र में परीक्षा होगी। मेरा केन्द्र बहुत अच्छा चल रहा है, इस कारण मुझे स्वयं पर गर्व होता है।

◆◆●◆◆

यह कैसी उधेड़बुन

कैलाश पपनै

इक्कीसवीं सदी के भारत में हर व्यक्ति दूसरे से खुशहाल होने की जद्दोजहद में लगा हुआ है। भाग–दौड़ भरे जीवन में फुरसत के क्षण मुश्किल से ही मिल पाते है। बस सभी में एक होड़ सी दिखाई देती है, औरों से अलग बनने की, दिखने की। सभी को मारते, धकेलते बस होड़ सी मची हुई है आगे जाने की, पर शायद यह कम ही लोगों को पता है कि आगे जाना कहाँ है?

तीन दशक पूर्व उत्तराखण्ड में गाँवों का रहन–सहन बिल्कुल अलग था। आज गाँव पूर्ण रूप से बदले हुए नजर आते हैं। जिन गाँवों में बच्चों की किलकारियाँ, पक्षियों के कलरव, बैलों की घंटियाँ, किशोरों के गीत सुनाई देते थे, अब वहाँ पर बूढ़े पैरों की पद–चाप मात्र सुनाई देती है। आज गाँवों में वृद्धजन पथराई हुई आँखों से अपने बचे हुए समय को व्यतीत करने का प्रयास कर रहे हैं।

पहले संयुक्त परिवार प्रथा का होना गाँव की शान में शामिल हुआ करता था। खेती, घर व घर से बाहर के सभी कामों में पता भी नहीं चलता कि किसने क्या काम निपटा दिया। बच्चे साथ रहते, खूब खेलते और प्रेम बना रहता। दादा–दादी के हाथ घर की बागडोर होती। वही परिवार में सब के बीच कामों को बाँटते। बच्चों का दादा–दादी से जुड़ाव रहता। आज न जाने क्यों इन रिश्तों की जरूरत भी दिखाई नहीं देती। घर को तीन–चार लोगों में समेटकर रख दिया गया है। गाँव अब दादा–दादी का ही घर रहा। बच्चों के बीच ''हमारा घर'' होने की परिकल्पना अब धुमिल–सी हो गयी है। आज एकल परिवारों में मालूम ही नहीं चलता कि अपने लोग कहाँ पर है।

इसका कारण भी शायद यही रहा होगा कि पहले मनुष्य की आवश्यकताएं एक दूसरे पर निर्भर होती थी। कोई खेतों में अच्छा हल चलाता तो कोई अच्छी घास काटने की क्षमता रखता। कोई अच्छी तरह से पढ़ा सकता था तो कोई जानवरों के पालन पर अच्छा काम करता। शादी–विवाह के निर्णय लेते समय किसी चतुर व्यक्ति की आवश्यकता होती। वही सब मापदंडों में तोलकर शादी की रजामंदी दिया करते। समय के साथ चीजें बदलती गयी। आज पैसे के आगे सभी नतमस्तक हैं। शादी हो या अन्य कोई काम, आपसी निर्भरता खत्म हो गयी। व्यक्ति 'एकला चलो' के नारे पर काम करने लगा।

गाँव अपनी पुरानी पहचान खो चुके हैं। खाली–खाली पड़े गाँवों के आँगन अपने पुरानी दिनों को याद करते मालुम होते हैं, शायद मन ही मन हमें बुला भी रहे हों। उनकी सिसकी सुनने वाले को कोई फिक्र नहीं है। वह तो शहर में अपने बच्चों के जीवन को बेहतर बनाने की होड़ में लगा हुआ है। यही होड़ उसे गाँव वापस न आने के लिए भी विवश करती है।

लोगों के बीच आपसी निर्भरता के सूत्र बदल गये हैं। आज सभी कार्यों का समाधान व्यवसायिक तरीके से ढूँढ़ा जाता है। मोबाइल के जमाने में सारे काम एक फोन करने पर ही हो जायें तो किसे परवाह है कि दूसरों को बताता फिरे।

इन सब बातों को मैं ग्राम–भ्रमण के अनुभवों के आधार पर लिख रहा हूँ। अपने ही गाँवों में जब अकेली ताई चार गायों के साथ काम में जुटी हुई दिखाई देती है तब समझ में आता है कि समय बदल गया । बेटे–बहू वर्षों से देखने नहीं आये हैं। ताई झुकी हुई कमर को बाँधकर आज भी अपने काम में लगी है। ऐसे उदाहरण एक नहीं बल्कि अधिकतर गाँवों में देखने को मिलते हैं। एक अन्य गाँव में बूढ़ी माँ साल भर से इसी आस पर है कि अकेले अब रहा नहीं जाता। चाहे बुरा ही क्यों न लगे पर बच्चों के साथ ही रहूँगी। वह दिन कब आयेगा? उनका इन्तजार कब खत्म होगा, पता नहीं।

संयुक्त परिवार के बारे में कई बार वृद्धजनों से बातें की। कुछ लोग खाने–पीने की कमी को देखते हुए कहते हैं कि बड़ा परिवार था। खाने को पूरा नहीं मिलता था पर रहते सब प्यार से थे। गाँव भरा–भरा था। आज बिल्कुल अलग स्थिति है। जो गाँव से बाहर बड़े शहरों में चला जाता है उसे स्वयं को ग्रामीण पृष्ठभूमि का बताने में शर्म महसूस होती है। तथापि सभी को पुराने दिनों की याद जरूर आती है। शहरों में रह रहे लोग कहते रहते हैं कि रहना–सोना चाहे कैसा भी हो पर रहते तो परिवार के साथ ही थे।

कोविड का रोग लोगों को एकाएक गाँवों के पास खींच लाया। पहले लॉकडाउन के दौरान बहुत बड़ी संख्या में लोग गाँवों की तरफ आये। जो बच्चे कई वर्षों तक माँ–पिता को देखने नहीं आते थे, कहते कि छुट्टियाँ नहीं मिल रही, या बहू हमेशा बच्चों की परीक्षाओं का बहाना बनाया करती, इस संकट काल में गाँव ने उन्हें सहारा दिया, बिना किसी हिचकिचाहट के स्वीकार भी किया।

जब हम साथी कार्यकर्त्ता लॉकडाउन खत्म होने के बाद द्वाराहाट, कर्णप्रयाग, गणाई–गंगोली क्षेत्र के गाँवों में गये तो देखा कि कुछ लोग नये मकानों की बुनियादें खोद रहे थे। पूछने पर पता चला कि अब ये गाँव में भी अपना एक मकान बनायेंगे। इतने सालों के बाद पुराने मकान का तो केवल खण्डहर ही शेष रहा। इस दौरान कुछ लोगों को क्षेत्र के पटवारी के पास चक्कर काटते देखा गया। पूछने पर लोगों ने बताया कि ये आज पच्चीस–तीस साल बाद गाँव में आ रहे हैं। माँ–पिता तो गुजर गये। अब इन्हें पता नहीं कि हमारी जमीन कौन सी थी। पटवारी से बातें कर के अपनी जमीनों को देख रहे हैं।

आज लगभग प्रत्येक गाँव में सड़क आ चुकी है। मैं कभी सोचता था कि सड़कें लोगों को फिर गाँवों की ओर वापस ले आयेंगी पर मैं गलत था। सड़क बाहर से लोगों को अन्दर तो नहीं ला सकी पर गाँव से बाहर ले जाने का काम करती रही।

नंदा पत्रिका में प्रकाशित पिछले एक लेख में मैंने पहाड़ में होली के बारे में लिखा था। यह बताया था कि आज होली, दीवाली जैसे त्यौहारों में लोग गाँव तो नहीं आ रहे पर शहरों की तरफ जा रहे हैं। आज पहाड़ के अधिकांश लोग पहाड़ी–होली का गायन दिल्ली की तंग गलियों में करते हैं। गाँव आने की तैयारी किसी की नहीं। पहले ये बड़े त्यौहार ही होते थे जो माँ–पिता, आमा–बूबू की आँखों में खुशियाँ लेकर आते। माँ–बाप इन दिनों का बेसब्री से इन्तजार करते कि बच्चे घर आयेंगे और कुछ दिन साथ रहेंगे।

बदलाव जरूरी है, पर इतना? मेरी समझ तो यही कहती है कि सरकारें गाँवों की आधारभूत जरूरतों पर ध्यान दें। खेतों में जंगली जानवरों से हो रहे नुकसान को मिटाने के लिए कोई नीति बनायें। पानी, बिजली, सड़क के साथ ही अस्पताल में सुविधा व स्कूलों में दी जा रही शिक्षा की गुणवत्ता पर अधिक ध्यान दें। गाँव में रह रहे लोगों को रोजगार के नये अवसर मिलें। पलायन एक स्वाभाविक प्रक्रिया है। जरूरी भी है, पर उत्तराखण्ड के गाँवों से जबरदस्ती का पलायन हो रहा है।

सच कहूँ तो पहाड़ का व्यक्ति एक उधेड़बुन में जी रहा है। एक तरफ उसे देखता हुआ, वह गाँव है जहाँ बचपन जिया। दूसरी तरफ शहर है, जो जानता है–कब तक नहीं आयेगा, आना तो पड़ेगा ही।

◆◆●◆◆

अनाज न बो कर घास लगा रहे

संतोषी कुंवर

मेरे गाँव का नाम ग्वाड़ है। यह गाँव दशोली विकासखण्ड के चमोली जिले में पड़ता है। हमारे गाँव में कुल दो सौ परिवार निवास करते हैं। कुछ लोगों ने गाँव से पलायन कर लिया है। हमारा गाँव जिला मुख्यालय का प्रथम गाँव है। हमारे यहाँ धान, गेहूँ, मडुआ, झंगोरा और दलहनों में गहत, सोयाबीन व तोर मुख्य रूप से होती है। अब फसलें बोयी तो जाती है पर खेतों में कुछ नहीं हो रहा। गाँव में रोपाई कर के धान की खेती की जाती है। रोपाई में सभी लोग बहुत मेहनत करते हैं। जब फसल काटने का समय होता है तो लोगों को निराशा के अलावा कुछ नहीं मिलता।

जंगली जानवरों का इतना आतंक हो गया है कि खेतों से कुछ मिलना संभव भी नहीं है। जंगली जानवरों में लंगूर, भालू, सुअर, बंदर ये सभी जानवर खेतों को नुकसान पहुँचा रहे हैं। बची हुई फसलों जैसे झंगोरा, मडुआ को चिड़ियाँ भी खाती जाती है। इन सब समस्याओं के चलते लोग अब खेतों में अनाज न बोकर घास लगा रहे हैं। बरसात के मौसम में सब्जियाँ बोयी जाती हैं। पहले तो टमाटर, कद्दू, भिण्डी, लौकी, आलू, बैगन प्रचुर मात्रा में होते थे। लोग सब्जियाँ बाजार में बेचते भी थे पर अब जंगली जानवरों के प्रकोप से अपने घर के लिये भी सब्जी पूरी नहीं हो पाती।

कुछ लोग गाँव से पलायन कर रहे हैं। उन के खेत बंजर हो रहे हैं। संगठन की सदस्याओं ने प्रशासन के समक्ष गुहार लगायी थी। प्रशासन के द्वारा कोई मदद नहीं मिली। कई बार महिलाएं एकत्र होकर खेतों से जंगली जानवरों को भगाने का प्रयास करती हैं, पर जानवर रात को आकर नुकसान पहुँचा रहे हैं। बंदर भगाने के लिए दिन में दस–दस महिलाओं की बारी लगा रखी है। रात में बाघ व भालू का खतरा बना रहता है। इससे लोग डर जाते हैं। फिर भी कभी–कभी जान जोखिम में डालकर महिलाएं रात को भी खेतों में चली जाती हैं। गाँव के आस–पास घना जंगल होने के कारण जानवर खेतों में आ रहे हैं। फसल उगते समय हिरन आकर चर जाते हैं। इस कारण लोगों ने अपनी आजीविका चलाने के लिए बड़े–बड़े खेतों में घास पालना शुरू कर दिया है। उन्होंने आजीविका के लिए गाय, भैंस, बकरी इत्यादि पाल रखे हैं।

कृषि से कोई लाभ नहीं मिल पा रहा। यहाँ तक कि खेत में जितना बीज बोया गया, उतना भी उत्पादन नहीं मिल रहा है। पहाड़ों में अब खेती पूरी तरह

से चौपट हो गयी है। महिलाएं खेतों में बहुत मेहनत करती है। जंगली जानवरों के कारण उनको मेहनत का कोई फल नहीं मिल रहा। शासन–प्रशासन इन जंगली जानवरों पर कोई ध्यान नहीं दे रहे हैं। हम विभिन्न मंचो से अपनी समस्या को बताते हैं लेकिन कोई सुनने वाला नहीं है। ऐसा ही चलता रहा तो गाँवों में कोई भी व्यक्ति खेती नहीं करेगा तथा जिन लोगों का रोजगार का एकमात्र साधन खेती है उनके लिए बड़ी समस्या हो जायेगी।

◆◆●◆◆

उत्तराखंड महिला परिषद्

उत्तराखण्ड महिला परिषद्, उत्तराखण्ड की जागरूक एवं क्रियाशील ग्रामीण महिलाओं का संगठन है जिसने ग्राम समुदाय में विकास की मुख्य–धारा के ढाँचे से अलग एक वैकल्पिक विकास की व्यवस्था और उसके क्रियान्वयन के तौर–तरीके विकसित किये हैं। उत्तराखण्ड में ग्रामीण महिलाओं के एक बड़े संगठन के रूप में प्रतिष्ठित महिला परिषद् का काम राज्य भर में फैले हुए ग्राम–स्तरीय संगठनों व स्वैच्छिक संस्थाओं ने संभाला है, जो ग्रामीण इलाकों में परिवर्तन लाने के लिए निरंतर प्रयासरत हैं।

यद्यपि उत्तराखण्ड में महिला संगठनों के गठन एवं कार्यों की शुरूआत 1988 से हो गयी थी परंतु चार सौ पैंसठ महिला संगठनों की सोलह हजार सदस्याओं तथा बाइस स्वैच्छिक संस्थाओं की सम्मिलित आवाज से विकास संबंधी समस्याओं को संस्थात्मक, व्यवहारिक एवं वैचारिक मध्यस्थता देने की जरूरत को समझते हुए, 7 फरवरी, 2000 को उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान, अल्मोड़ा में उत्तराखण्ड महिला परिषद् का गठन किया गया। यह जरूरी नहीं कि गाँवों में समृद्ध तथा शिक्षित महिलाएं परिषद् की सबसे क्रियाशील सदस्य हों। इस जनधारणा के विपरीत कि आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर, शिक्षित या उच्च जाति की महिलाएं अच्छा नेतृत्व कर सकती हैं, गाँव की प्रौढ़ महिलाएं, जो यहाँ की स्थाई निवासी हैं, परिषद् की अधिक क्रियाशील सदस्याएं हैं।

उत्तराखण्ड महिला परिषद्, ग्रामीण महिलाओं के ऊपर कार्यक्रमों को थोपती नहीं बल्कि उन्हें ग्राम शिक्षण केन्द्रों की शिक्षिकाओं, संस्था प्रमुखों, पुरूषों, अध्यापकों, युवाओं, स्थानीय अधिकारियों तथा अन्य संगठनों से सम्बन्धित महिलाओं से प्रत्य क्ष रूप से मेल–जोल रखने तथा सीखने के अवसर प्रदान करती है। इस बात का विशेष ध्यान रखा जाता है कि परिषद् ऐसे कामों को महत्व दे, जो स्थानीय महिलाओं द्वारा स्वयं आयोजित तथा क्रियान्वित किये जा सकें। स्त्री–पुरूष या फिर जातिगत असमानता से सम्बन्धित भावनाएं और बाधाएं गोष्ठियों में खुलकर सामने आते हैं, जो परिषद् द्वारा उत्तराखण्ड में विकास कार्यक्रमों को सुचारू रूप से क्रियान्वित करने की दिशा में एक अनौपचारिक एवं महत्वपूर्ण कदम है।

जमीन–प्रबन्धन से जुड़े कार्यों में पौधों की नर्सरी बनाना, चारा उत्पादन, घेराबंदी करना, खाद बनाना, रोकबाँध बनाना, जानवरों की मुक्त चराई पर सम्मिलित रूप से रोक लगाना, जंगलों को बचाना, वनीकरण तथा प्राकृतिक सम्पदाओं का पुनरूत्पादन आदि काम सम्मिलित रहे हैं। पानी से जुड़ी समस्याओं का समाधान (जैसे–पुराने स्रोतों का जीर्णोद्धार, वर्षा जल संरक्षण, प्लास्टिक की अस्तर वाली टंकियाँ, फेरो–सीमेंट टेंक आदि) संगठनात्मक तरीके से किया जाता है। स्वास्थ्य और स्वच्छता कार्यक्रमों में शौचालय बनाना, महिलाओं की स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं, व्यक्तिगत सफाई, घर एवं गाँव की स्वच्छता, पोषण संबंधी जानकारियों को फैलाना एवं संबंधित गतिविधियों का संचालन आदि कार्य सम्मिलित रहे। सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक असमानता संबंधी विषयों पर शिक्षा व जागरूकता लाने के लिए गोष्ठियाँ, सेमीनार, कार्यशालाएं तथा प्रशिक्षणों का आयोजन किया जाता है। परिषद् की अनेक सदस्याएं पंचायत प्रतिनिधि बन कर महिलाओं की आवाज को बढ़ा रही हैं। हर वर्ष परिषद् द्वारा उत्तराखण्ड के विभिन्न जिलों में महिला सम्मेलन आयोजित किये जाते है। पूर्व में महिला साक्षरता एवं शिक्षण कार्यक्रम भी चलाया गया।

वर्तमान में ग्रामीण महिलाओं को आय–वृद्धि के लिये साधन एवं प्रशिक्षण उपलब्ध हैं। सिलाई, बुनाई, ब्यूटिशियन का प्रशिक्षण ले कर अनेक महिलाओं ने अपनी दुकानें खोल ली हैं। अन्य स्त्रियाँ घर में ही कपड़े सिलना, स्वेटर–टोपी इत्यादि बुन कर आय अर्जित कर रही हैं।

संगठन की सदस्याएं उत्तराखण्ड में विकास कार्यक्रमों में नीतिगत बदलाव की माँग करती रही हैं। विभिन्न सरकारी और गैर सरकारी कार्यक्रम जो कि ग्रामीण विकास, महिला विकास, शिक्षा, कृषि, जंगल, पानी, आयवृद्धि और पंचायती राज व्यवस्था के लिए बनाये गये हैं, उनके बारे में ग्रामीण महिलाओं की अपनी समझ, जानकारी और अनुभव है। साथ ही, उत्तराखण्ड महिला परिषद् के रूप में काम करते हुए महिलाओं ने विकास के मुद्दे पर अपनी एक वैकल्पिक समझ व कार्य–विधि विकसित की है। इन्हीं अनुभवों को आधार बनाकर उत्तराखण्ड महिला परिषद् की सदस्याएं, सरकारी नीतियों व कार्यक्रमों में बदलाव व सुधार की माँग करती हैं।

sevanidhi.almora @sevanidhi6198 usnpss